रातिदिन

रातिदिन

जगदीश प्रसाद मण्डल

ISBN : 978-93-80538-73-0

दाम : १०० रू. मात्र

पहिल संस्करण : 2012

श्रुति प्रकाशन

रजिस्टर्ड ऑफिस: ८/२१, भूतल, न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली-११०००८
दूरभाष-(०११) २५८८९६५६-५८ फैक्स- (०११) २५८८९६५७
Website:http://www.shruti-publication.com
e-mail: shruti.publication@shruti-publication.com

Printed at: Ajay Arts, Delhi-110002

Typeset by: Shri Umesh Mandal

Distributor :
Pallavi Distributors, Ward no- 6, Nirmali (Supaul),
मो.- 09572450405, 09931654742

Rait-Din : Anthology of Maithili Poems by Jagdish Prasad Mandal.

अप्पन बात

मैथिली कथागोष्ठीक आयोजनमे आठ दिन बँचल छल। जनकपुरक गोष्ठी तँए जेबाक विशेष जिज्ञासा। आने गोटे जकाँ गोष्ठीमे नव कथाक पाठ करैत छी। तइसँ मनमे ताजगियो बनल रहैए। गोष्ठीपर नजरिपड़िते बामा हाथक आंगुरपर दिन गनलौं। आठमे दिन गाष्ठी छी, कथा कहाँ भेल? पनरह-बीस दिन पहिने जे लिखने छलौं से तँ विदेह ई-पत्रिकामे आबिचूकल अछि। ओह! अनेरे कथा पठेलौं...। केना नै पठैबतौं? अनुभवो तँ किछु छिऐ...। कहलो गेल छै- "जतए ने जाए रवि, ततए जाए कवि, मुदा जतए ने जाए कविततए जाए अनुभवी।"

भेलो तहिना रहए। एकटा सम्पादक गिड़गिड़ाएल रहथिजे वस्तुक अभावमे पत्रिका केर अगिला अंक बिलमिसकत। पठौलापर दू सालक बाद छपलनि। खएर जे होउ। आठ दिन, कथा लिखैक लेल समए जँ कम नै भेल तँ बेसियो नै। प्रश्न लिखिनिहारपर निर्भर करैत। कोनो ओझराएल नै बूझिपड़ल। नजरिजनकपुर दिसबढ़ल। एक दिसनव प्रजातंत्र देशक गोष्ठीमे भाग लेब जे हजारो बर्खसँ राजतंत्री बेबस्थाक जिनगी पाबिघसाएल सिक्का जकाँ भऽ गेल अछि। जेकर चिन्ह-पहचिन्ह खिआ कऽ एकबट्ट भऽ गेल अछि। खाली आकार टा शेष बँचल छै। बाजारमे एकरा के पूछत? जेहने मन हल्लहुक छल तेहने चिड़चिड़ी लागल टिक जकाँ ओझरा गेल। एक दिसओझरी छोड़बी तँ दोसर दिसलगिजाए। मनकेँ बहटारौ चाही से बहटबे ने करए। ओझरियो तेहन जे जत्ते छोड़बी तत्ते बेसियाएले जाए।

जहिना टीकक ओझरी छोड़बैमे दुनू डेन उठौने-उठौने भरा कऽ दुखाए लगैत तहिना मनो असोथकित भऽ गेल। आँखिक पुतली तँ देखिपड़ए मुदा इजोतक कतौ पता नै। तहिना देहो-हाथ पनिमरू भऽ गेल। ने अक चलए आ ने बक। अकछिकऽ रेडियो खोललौं संयोगो नीक बैसल। दरभंगासँ गीत चलैत रहै- "राही चल ओ राही चल..." सम्पन्न होइते- "जीवन चलने का नाम, चलता रह सुबहो शाम..."क टुनिंग हुअए लगल। जहिना अनभुआर ठाम दिशांस छुटिते बदलल-बदलल दिशा बूझिपड़ैत तहिना भेल। जाड़क मासमे जहिना भिनसुरका रौद पीअरगर लगैत तहिना गीत पीअरगर लगल। मुदा एकटा विचित्र दशा सेहो उपस्थित भेल। ओ ई जे कनी-कनी कऽ सुतैले आँखियो झलफल करए लगल तखने मनमे एक नव बात आएल। मन उनटिकऽ अपनापर पड़ल। गीत मनमे

घुरिआइते छल। एक तँ जत्ते मातृभूमि-मिथिलाक जे चित्र मनमे बनल अछिओकर साकार रूप देखैमे जते श्रमक खगता छै तेकर पाँचो प्रतिशत सेवा नै कऽ सकलौं अछि, तखन? मुदा जेहने नमहर प्रश्न तेहने बेसी टोंटी हैदराबादी ओल जकाँ नै अपितु अड़ुआ, टौकना जकाँ एकसिरा। मुदा विचारमे एकटा नव बात जरूर जोड़ाएल। ओ ई जे असगरमे कत्ते कएल जा सकैए? गंगा धार जकाँ चौड़ाइ तँ कनी कमो बूझिपड़ए मुदा लम्बाइक ओर-छोड़ देखबे ने करिऐ। पाछू घूमिदेखी तैयो ओहिना आ आगू दिसदेखी तैयो ओहिना कतौ-सँ-कतौ पानिक धारा धड़धड़ाएल जा रहल अछि। अखन धरिजे किछु लिखलौं ओ गद्य लिखलौं पद्य तँ सोलहन्नी छूटले अछि। जहिना चारिबाटक चौबट्टी वा तीन बाटक तीनबट्टी वा दू बाटक दुबट्टीक बीचमे चौड़गर जमीन रहैत तहिना गद्य-पद्यक बीच चबुतरा बनबए जोगर खाली जगह भेटल। अराम करैक विचार मनमे उठए लगल आकितइसँ पहिने मनमे उठिगेल जे जखन जिनगी 'चलै'क नाओं छी तखन अपनो तँ थुसकुनियेँ मारिअराम करए चाहै छी, तखन साँझ-भिनसर चलब केना भेल? प्रभातीसँ प्रभातक सुआगत होइए। संध्यासँ साँझक। सोहर-समदौन जकाँ ओर-छोर कहाँ अछि। मन घुरिआएल। जहिना कोनो गाममे तेहरा-चौहरा कऽ डूब्बा बाढ़िआबिखेत-पथारसँ लऽ कऽ घर-घराड़ी धरिडुमा दैत तहिना भेल। मनक सभ किछु हरा गेल। अचेत भऽ गेलौं। चेत होइते जनकपुरक गोष्ठी पुन: मनमे उठल। मुदा कथा-गोष्ठी लगले हरा गेल। जनकपुरसँ मन जानकीक वनबास दिसबढ़िगेल। जे राम, जानकीक खोज गाछ-बिर्छसँ पूछिपूछिलगबैत रहथितिनका मनमे जानकीक प्रतिअविश्वास, एकटा नान्हिटा बात सुनिभेलनि? की विश्वास-अविश्वासक गाछ एत्ते छोट छै जे एकटा पत्ता खसने गाछक रूप बदलिजेतै? मुदा गाछसँ आगू बढ़िमन गाछीक वन दिसबढ़ल। चौदह बर्ख राम वनमे रहलाह। जइ वनमे कतेको ऋृषिमुनिक आश्रम पहिनेसँ छल। ओ वन केना भेल? जँ भेल तँ हुनका सभकेँ वनबास किअए भेल छलनि? मन ओझरा गेल। मुदा लगले मनमे उठल- "पोथी ने ही ज्ञान दिया है, पोथी ने गुमराह किया है!"

एक संकल्पक संग मन आगू बढ़ल। पद्य सेहो लिखैक विचार जगल। मुदा गद्ये जकाँ तँ पद्योक संसार छै। पोखरिक अथाह पानिमे डुमए लगलौं। धरतीपर पएर रोपए चाही तँ साँस फूलए लगए आ हाथ चलबैत ऊपर होइ तँ सोलहो अना पानियेमे चलिआबी। धरती छूटिजाए। विचित्र स्थितिबनिगेल। मनक मनोरथ मनेमे घुरियाए लगल। आब तँ बीस-पच्चीस बर्खक उमेरो नै अछिजे बिआह, दुरागमन आ कनियाँक गप-सप्प लिखब। साठिसँ ऊपर पहुँचिगेल छी। सींग कटाएब सोहो नीक नै बूझिपड़ए। मुदा सींगो कटा तँ पड़ू जेरमे मिलिनिहारक

कमी नै। मन ओझरा गेल। आगू तकलौं तँ बूढ़-बुढ़ानुसपर नजरिपड़ल। नजरिपड़िते खौंझ उठिगेल। केना नै उठैत? साठिसालक जिनगीक अनुभव केनिहार सभ तँ अपने मकड़जालमे ओझरा जाइत। मुदा तेकर दोख किनका सिर मढ़ल जाए? किछु फुड़बे ने करए। आगू-पाछू करैत मन घूमिदूधमुँहाँ बच्चा सभ दिसबढ़ल। ठमकलौं। मुदा हाटक बड़द जकाँ मुँह-कान, रंग-रूप देखिजोड़ा लगबए चाहलौं तँ ने दूटाक मुँहक जोड़ा लगए आ ने चालिढालिक। फेर लजैनी उपजल राड़ीक खरहोरिजकाँ ओझरा गेलौं। पलाएल खढ़ रहने जमीन नजरिपर पड़बे ने करए। तेना भऽ कऽ जमीन झपाएल! अंदाजसँ डेग बढ़बए चाही तँ चुप-चुप लजैनीक काँट गड़ए। आब की करब? रस्ता चलल राही जकाँ बिनु चलनहिदेह-पएर दुखाए लगल। एक्के उम्रक दूटा बच्चामे एत्ते अन्तर केना आबिगेल। पाँचे बर्खक बच्चा दस बर्खबलाक कान कटैए तँ दोसर दिसतीनियो बर्खक बच्चासँ पछुआएल अछि। शरीरेक अन्तर नै, बुधियोक दूरी। एहनो तँ होइत जे पच्चीसो-तीस बर्खबला दस-बारह सालक बच्चोसँ पछुआएल अछि। प्रश्न उठैत जे बच्चा केकरा कहल जाए? शरीरक काँतिये आकिबुधिक काँतिये? तत्-मत् करैत बोधेक आधारपर बच्चाक सीमा निर्धारित करए चाहलौं। मुदा कोनो भारी मोटा उठबैमे तँ सीमा ढहिजाइत। हारिथाकिमन एतए पहुँचिगेल- जखन जे विचार हएत तखन से लिखब। जइसँ कविता संग्रह एकबट्ट नै वरण् इन्द्रधनुष जकाँ सतरंगा भऽ गेल अछि। सतरंगा होइक दोसर कारण ईहो भेल जे अखन धरिकविताक मर्मकेँ नीक जकाँ नै पाबिसकलौं अछि। कखनो तुकबन्दी तँ कखनो खटमिट्ठी तँ कखनो रका-टोकीकेँ बुझे छी। जखन जेहन मन खनहन रहल तखन से बुझै छी। अपन बात एतबे कहब।

सतरंगी वैभवसँ सज्जित पोथी समक्ष अछि। अपन साहित्यिक जीवनक श्रीगणेश करबामे कविवा कलाकार कतएसँ आ केना प्रेरणा पबैत, 'मंद कवियश: प्रार्थी'क कार्य शुरू करैछ कहब कठिन अछि। तेकरो कारण अछि। कियो पचपन-साठिबर्खक अवस्थामे साहित्य-संसारसँ संयास लैत छथितइठाम हम शुरू केलौं। तँए विचारमे किछु अन्तर हएब स्वभाविके अछि। कियो जुआनीक रसमे डूमिकविता लिखलनि, तइठाम अपनाकेँ फीका बुझै छी। मुदा ईहो तँ बात अछिजे कियो मृत्युक चित्रण करैमे अपने मरिकऽ अनुभव नै करैत। भरिसक तखन प्रेरणा-स्रोत भीतर नै भऽ अधिकतर बाहरे रहैत। अपना समैक कविक रचनासँ कोनो-ने-कोनो रूपे प्रभावित भऽ उदीयमान कविअपन लेखनीक परीक्षण करैत। जहिना एक दीपसँ दोसरमे ज्योतिअबैत तहिना आन-आन कविक कृतिहृदैकेँ सौन्दर्यसँ स्पर्श करा शिखा जरबैत। ओइ ज्योतिमे (प्रकाशमे) अपन

भीतर-बाहरक रूचिक अनुरूप ओइमे संस्कार दऽ अपनापनक छाप लगबैत।

अपन कवितासँ स्पष्ट होइत जे किशोर प्राण-मूक कविकेँ बाहर आनक सर्वाधिक श्रेय अपन जन्मभूमिक ओइ नैसर्गिक सौन्दर्यकेँ अछि, जिनका कोरामे पलिनमहर भेलौं। ओना अपना भीतर ओहन संस्कार अवश्य रहल अछिजे कविताक प्रेरणा देलक।

कविआ लेखक, अपना युगसँ प्रभावितो होइत आ युगकेँ प्रभावितो करैत। ओना किछु रचना छोड़िमैथिली कविताक सर्वाधिक आग्रह रूप-विधान आ शिल्पक प्रतिरहल अछि। भावपक्ष मूलत: वैयक्तिक बनल अछि। भावनाक उदात्तता, सार्वजनिक उपयोगिता, अर्थ-गांभीर्य दिसअधिक आकृष्ट नै अछि। अपन चारू दिसक परिस्थितिक अन्हार मानसिक कुहेसमे किछु टटोलैत मात्र अछि। सत्यसँ अधिक ओकर आस्था क्षणकेँ बदलैत यथार्थेमे अछि। एहन भाव वा वस्तु-सत्य जेकर मानव जीवनक कल्याणक लेल भऽ सकए, नै अछि। ओ प्रतीक बिम्ब, शैली आरो विधाक जन्म दऽ रहल अछिजे अतिशय वैयक्तिक रूचिक तथ्य-शून्य तथा आत्म-मुग्ध कविता छी। जहन किआइ सर्वदेशीय संस्कृतिक, मानवता आदिक प्रश्न साहित्यक सम्मुख उपस्थित अछि।

अपन कवितामे मध्य-युगक आध्यात्मिक आ आदर्शवादक चेतनाकेँ नवीन लोक-चेतनाक स्वरूप देबाक प्रयत्न कऽ ओकर निष्क्रियताकेँ सक्रिय बनबैक प्रयासक संग ओकर वैयक्तिकताकेँ उन्नत सामाजिकतामे परिणत करैक चेष्टा कएल अछि। ‘हरिअनंत हरिकथा अनंता’क संग विराम लैत छी।

श्री नागेन्द्र कुमार झा एवं श्रीमती नितु कुमारीक सहयोगक बिना ई पोथी अपनेक हाथ तक आबिपबिताए किनै से कहब कठीन अछि। अर्थात हिनक उपकार नै बिसरिसकब, जे पोथी प्रकाशनक कार्य केलनि। ई पोथी प्रकाशन योग्य अछि, एकर प्रकाशन हेबाक चाही, ई निर्णए केनिहार सम्पादक गजेन्द्र ठाकुर जीक हंस दृष्टिसँ छुब्ध छी।

श्रुतिप्रकाशनक सम्पूर्ण कार्यकर्तागणकेँ हृदैसँ धन्यवाद दइ छियनि।

-जगदीश प्रसाद मण्डल

गाम- बेरमा, तमुरिया, मधुबनी (बिहार)

अनुक्रम

संघर्ष

पएर पंज पबिते पबैत
पैजनि चाह करैए।
तहिना चाहि चेत कुंड
धारण जिनगी करैए।
काया-माया संग सदए
मिलि संग जिनगी पबैए
शिव सदृश सीमा सिरजि
राति-दिन रूप धड़ैए।
बीच कृष्ण घन-श्याम जना
महाभारत द्वापर रचैए।
संग मिलि तहिना सदए
विपरीत दिशा धड़ैए।
एक कौरव एक पाण्डव बनि
शरीर-शरीरी खेल करैए।
गीता गाबि सम्हारि शास्त्र
लीला जिनगीक रचैए।
भरल हाथ एक, एक निहत्ता
उतरि भूमि वंश कुरुक्षेत्र।
हारि-जीत संगे सिरजि
संग मिलि रक्छो करैत।

निर्जीव दूध निकलि सजीव
आगि चढ़ि आरो निर्जीव बनैए।
कहि दही मटकुर सजि
दूध-दही कहबैए।
होइते ठाढ़ि बनिते दही
प्रेमी चाह करैए।
पाबि प्रेमी प्रेम पकड़ि
पपीहा नाच करैए।

पकड़ि संग संगी बना
मर्त सर्ग संग सजैए।
कहि-कहि जीवन-मरण
साँझ-भोर डहकैए।
उदय-अस्त नचिते-नचैत
भू-भूलोक भुलबैए।
बरैस बादल गरैज-गरैज
मन मगन करबैए।
आशा-आस सटिते-सटैत
आँखि धार धारण करैए।
पकड़ि प्रेम पड़ि पएर
राहीक राह रचैए।
सीचि जल शीतल बना मन
चलए संग कहैए।
बिनु सिरक राही रचि
भवसागर टपए कहैए।

अजस्त्र धार भवसार सजल छै।
नाओं एक खाली पड़ल छै।
डेग-डेगी डेगिते डगै
डगमग-डगमग पएर करै छै।
डोर-डोर पकड़ि डारि
बनि-बनि सुत घिचै लगै छै।
बनल सुत राही जेना
तहिना सगरो पसरल छै।
पिछड़ि-पिछड़ि दीन-हीन
रूप सजि सटै छै।
कियो सटि झूलैत दॉया
बामा कियो सटै छै।
कियो सटै कोनो कोनचर
कियो बीचे-बीच उड़ै छै।

सदएसँ होइते एलैए
होइते रहतै आगूओ दिन।
अन्हार-इजोत बीच सदए
दिन-राइतिक बीच दुर्दिन
दिन-दुर्दिन बनिते बनैत
अकास बीच उड़ैए।
सुदिन-कुदिन सीमा पकड़ि
निहाड़ि नजरि नचबैए।
डिम सतमी भगवती जेना
सिरजए सदैत ज्योति शक्तिक।
राति-महाराइत बैसि बीच
दर्शन दिशा दैत भक्तिक।
शक्त-शक्तिक संग सदए
जिनगीक होइत संघर्ष।
सीमा बीच जखन अबैत
मचबए लगैत दुर-घर्ष।
घर्ष-दुरघर्ष बीच जखन
जिनगी करए रस्सा-कस्सी।
बीच समुद्र सिरजि मथान
पकड़ए लगैत अपन-अपन रस्सी।
आँखि मिचैनी खेल अजीब
कखन सुर-असुर बनैए।
असुर-सुर बनिते, बनैत
कर्म-अकर्म एकबट्ट करैए।



साँझ-भोर

केकरो साँझ केकरो भोर छी
केकरो उदय केकरो अस्त छी।
दिनक अस्त साँझ अगर छी
राइतिक तँ उदये छी।
बारहे घंटा दिनो चलै छै
ततबे टा ने राइतियो होइ छै।
एक बराबर रहितो रहैत
दू रंग किअए बनल छै?

साँझ साँझ गाबि जगैए
घरमुहाँ जे बाट धड़ैए।
मुदा पराती कहि परात
संग सूर्य सेहो धड़बैए।
अजब रूप दुनियाँक बनल छै
नागे बीच मणि सेहो सजल छै।
मुदा मढ़ि मणि ओइ नागकेँ
राइतिये बीच प्रकाश करै छै।
दीन दिनानाथक पबिते पबैत
हिहिया-हिहिया हीन कहै छै।
हनछिन-हनछिन करिते करैत
दिन सानि राति बनबै छै।

राति दिन किछु भेद ने कहियो
बनल रहैत सदए सभ लेल।
कालचक्र मानि ज्योति-अज्योति
चलैत रहए सदए सबहक लेल।
घर-बाहर जीवन पसरल छै
साजि-सजि समेटि फुलडाली
समए-कुसमए पूजि-पूजि

टहलैत रहए सदए फलबाड़ी।
फुलबाड़ी बनिते फलबाड़ी
जिनगीक रस सिरजै छै।
पीबिते रस फलैक मन
जिनगी जिनगीक बूझै छै।

समए

समए संग तखने चलै छै
संगी बना संग मिलि चलबै।
बाट-घाट बीच देखैत-सुनैत
रस्सा-कस्सी करैत रहबै।
संगी तँ ओहन संगी छी
देखि परेख जेहन चलबै।
तेहने पग पगहा पहिरा
आगू-पाछू चलैत रहबै।

समए ने केकरो संग धड़ै छै
ने केकरो छोड़ै छै।
अपन-अपन भाग्य-करमकेँ
अपने आँखिये पकड़ै छै।
अपन पएर अपने नै देखब
पएर केना पग पकड़त।
पगडंडी बिनु पग पकड़ने
राति दिन केना बनत?
जहिना जीवन-मरण चलै छै
तहिना ने दुनियोँ बनल छै।
निर्जीवेमे जीव बसै छै
देहा-देही कहि सुनबै छै।
जहिना निर्जीव सजीव देखै छै
तहिना सजीवो निर्जीव देखै छै।
पकड़ि पएर एक-दोसरक
हँसैत-कनैत संग चलै छै।

सजीव निर्जीवक रस नै चिखबै
भोज्य रस केना बूझबै।
की खाएब की पीबि

बिनु ठेकाने जीब केना पेबै।
पाताल ऊपर सजल धरती
सात तल पातालो केर छै।
तहिना सात तल अकासो ऊपर
मर्त देवलोक कहबै छै।
भूवन चौदहो बीच भरैम
लहड़ि समुद्र केना पकड़ब।
पबिते संगी हिहिया-हिहिया
बाट अपन केना धड़ब।

जिनगीक मोड़

पानि बनि पाथर जखन
धरा-धार धड़ै छै।
घाट-बाट बना-बना
जिनगीये जकाँ चलै छै।
जइसँ पहाड़ उठै छै
सएह ने सिरजए अतल सागर।
अपन-अपन नाओं गढ़ि
एक पहाड़ दोसर कहबए सागर।
जहिना धाराक मोड़ घुमै छै
तहिना ने धारो बहै छै।
बाट चलैत बटोही जेना
जिनगीक मोड़ पबै छै।
पबिते मोड़ मुरछि जाइ छै
विराग मुरछि कहबै छै।
बनिते मुरछि तुरछि जाइ छै
पकड़ि बाट एक दोसर छोड़ै छै।

मोड़े ने जोड़ो कहबै छै
एक दोसरक बाट केर।
तेहने ठीन ने देखि पड़ैत
बाट-घाटक उनट-फेर।
जहिना-जहिना घाट घटै छै
तहिना ने बाटो मरै छै।
चलनिहार जेम्हर चलै छै
सएह ने चलनसाइर कहबै छै।
चलनसाइरो दुभिया जाइ छै
काँटो-कुश जनमै छै।
हवा-बिहारि सेहो झकझोड़ए
जे काटि एक पेड़िया बनै छै।

ततबे नै यौ भाय सहाएब?
पानि-पाथरक दोसरो किरदानी
बर्खा-बाढ़ि बनबै छै।
गामक-गाम दहा-भसा
उर्वर-उस्सर बनबै छै।
निहत्था हाथ बौआ रहल
निकम्मा पएरो बनल छै।
बनिते हाथ पएर निकम्मा
जिनगी बोझ बनै छै।
बोझो कि हल्लुक-फल्लुक
समुद्र पहाड़ बन्हल छै।
बेबस बुइध बौरा-बौरा
मर्माहत भेल पड़ल छै।

अकलबेड़ा

दिन-दिनक मध्यांतर जहिना
राइतियो राति तहिना पबै छै।
सिर चढ़ि दिनकर देखए जब
अकलबेड़ झटकि झमकै छै।
जबकल जल पोखरि जहिना
झील-सरोवर हँसि कहबै छै।
तहिना ठमकि दिवा निशाकर
अकलबेड़ तहिना कहबै छै।
ठमकल हवा कहाँ कहै छै
मुदा, हवा बनि हवा भरै छै।
भरिते हवा भरैक-भरैक
हुरैक-हुरैक धार धड़ै छै।
बनिते धार धारण करै छै
चुट्टी-पिपड़ी संगे उड़ै छै।
जीवन-मरण सिरजि-सिरजि
स्वच्छ गति स्वच्छन्द चलै छै।
जल जलमग्न करै छै
हवा तेना कहाँ करै छै।
मुदा, अकास-पताल बीच
शीतल कोमल प्रचण्ड होइ छै।
धार धरतीक समेटि-समेटि
अकास चढ़ि सुरसरि बहबै छै।
सुरसरि बनि अकासगंगा
नव थल हृदए पसझै छै।
अपना पएरे सभ चलै छै
अपने लए सेहो चलै छै।
अबिते भकमोड़ी-मोड़ बीच
अकलबेड़ ठमकए लगै छै।
बाजि महाभारत कहए जेना

दृष्टिकूट चौमेर बनल छै।
सए-सएक बीच सजि-सजि
आगू-पाछू सेहो जोड़ै छै।
ओइ चौमेरक बीचो-बीच
ॲटकैक ॲटकार बनल छै।
बिनु ॲटकारे बूझि ने पेबै
दसो दिशा ओ देशांतर।
एक-दोसरकेँ जानि ने पेबै
बाम-दहिन बीचक अन्तर।

जिनगीक बीच जलमग्न सजल
भवसागर नाओं धड़बै छै।
बिनु टपान टपि केना पेबै
कानि कलपि प्रेमी कहै छै।
बिनु पुले रामो ने पौलनि
पुष्प-बाटिका बीच सीता।
दिन-राति चिकैर-चिकैर
कण्ठ फाइड़ गबै छै गीता।
गुण-मंत्र अमुल्य औषधि
देखा देलनि सेवक हनुमान।
बना मार्ग हनुमन भक्त
पौलनि देवत्वक सम्मान।

भवसागरकेँ पार पबैले
नाव तीन लागल छै।
नारद-व्यास ओ हनुमान
अपन नाव रखने छै।
काया-माया संग चलै छै
छॉह बनि रूप सेहो धेने छै।
देखिते छॉह छिछलि-छिछलि
छोड़ि संग छिड़ियाए लगै छै।
तँए की ओ फेर संग छोड़ै छै

हटिते छाँह लपैक-लपैक
जत्र-तत्र पकड़ै छै।
आँखि मिचौनी खेल-बेल
कूदि-कूदि दिन-राति करै छै।
छैल-छबिली छमैक-छमैक
पानि-पाथर बनबै छै।
जे पाथर शिव भार उठाबए
कैलाश नाओं धड़बै छै।
वएह पाथर पानि बनि-बनि
अगम सागर सेहो कहबै छै।
जे पाथर उठबए भार शिव
पानि बीच डुमबै छै।
पाबि ताप सूर्जक प्रखर
हवा बनि-बनि उड़ै छै
पहाड़ सागर बनिते बनैत
सिर अकास चढ़ै छै।
घुमैड़-घुमैड़ अकास बीच
दूत, मेघदूत कहबै छै।
अलकापुरी अँटैक-अँटैक
प्रेमाश्रु धार बहबै छै।
तँए कि ओ बिसरि जाइ छै
गुण, धर्म ओ कर्मक मर्म।
एक-एकक‍ेँ समेटि-समेटि
सभ दिन बँचबए अपन धर्म।
बनि पाथर अकास बनबै छै
अकास पाथर कहबै छै।
झहरि-झहरि-झहरि सदए
किछु ने शेष रखै छै।
आँखि मिचौनी खेल खेला
जल थल नभ दौगै छै।
तहिना ने हृदैओ सदए
अपन चालि चलै छै।

धूप-छाँह

हे सूर्ज तोड़े पूछै छिअह?
ऊपर रहि तूँ किअए बनौने,
एना छह दोहरी बेवहार।
अपन रश्मि आगू बढ़बैमे
धरतीकेँ किअए केने अन्हार।
केना रोकि तोरा दइ छह
वन-उपवन ओ जंगल।
आस लगौने धरतियो बैसल
करै छह किअए मंगल-अमंगल।
बिहुँसि सूर्ज बाजल विह्वल!
कोनो भेद-भाव कखनो नै
मनमे कहियो उठैए।
जे जतए पकड़ि-पकड़ि
से अपन काज करबए लगैए।
जँ तोहू करबए चाहै छह
छाहरि छोड़ि निकलह बाहर।
जखने नजरि मिला-चलबह
तखनेसँ संग पूरए लगबह।
मर्माहत भऽ पुकारि धरती-
केना कऽ घुसुकि पेबै,
चारू दिस घेड़ने-ए।
केना कऽ संग पाएब तोहर
कानि-कानि मन कहैए।

माए

भेटि नै पबैत शब्दकोषमे
एक्को उदाहरण माइक लेल।
नजरि उठा जखन देखै छी
माताराम की सभ देल।
तीसे बर्खमे विधवा भेलौं
कहब कि अहाँसँ मइया।
मनुख बना ठाढ़ कऽ देलौं
बाकी कि रखलौं हे मइया।
कनतोड़ी भरि अपन आभूषण
बेचि-बिकीन लगा देलौं
जुआनी गला जे सिनेह विलहलौं
बदलामे हम की कऽ देलौं।
राखि-सम्हारि घरसँ बाहर
अपन ओ लागिक परिवार।
लुटा-मेटा अपन जिनगीकेँ
जिनगी जीबैक चढ़ेलौं धार।
हँसी-खुशी जिनगी ससरैए।
सटि-सटि आनो परिवार।
एक-दोसरमे भेद कहाँ-ए।
संगे-संग मानो-सम्मान।
नव-नव चेहरा सिरजि
नव-नव काज धड़बैए।
नव-नव परिवार समेटि
नव-नव सिनेह सजबैए।
अपन सदृश अपने हे मैया
शब्द कहाँ अछि जे किछु कहबह।
अपन रूप परसि-परसि
अपने सन हमरो बनेलह।

साथी

जिनगीमे साथी मिलए जँ,
जीवन रस पीबे करत।
जीवने रस ने अमृत कहबए
अमृतमय जिनगी जीबे करत।
जाबे अमृतपान नै होइ छै
साथी हराइक डरो रहै छै।
जहिना तेज धारा धारमे
हाथक साथी हथिआर (लाठी) छुटै छै।
कोमल-कड़ा बीख होइत जहिना
तहिना ने अमृतो होइ छै।
कात-करोट किनछेरे-किनछरि
घोंघा-सितुआ मोती भेटै छै।
नै अछि जरूरी कोनो
अमृत मधुर हेबे करत।
तीतोमे बास जेकर छै
नीक-नीक फल देबे करत।
आशमे अमृत बरसै छै
निराश छोड़ि आशावान बनू।
अपन जान-परान अपनेमे
मुट्ठी बान्हि-बान्हि आगू बढ़ू।
जहिना दुनियाँक रंग सतरंगी
तहिना चालि जिनगियो धड़ै छै
खसैत-उठैत, चलैत-चलैत
जिनगी रसपान करै छै।

घरक लोटिया बुड़ले अछि

घरक लोटिया बुड़ले अछि,
घर-घराड़ी गेले अछि।
गाम-घर उजरि-उपटि
नाओं-ठेकान बिसरले अछि।
घरक लोटिया बुड़ले अछि।
बेटा-पुतोहु निकलि घरसँ
देखलक शहर-बजार।
ओ कि फेरि घुरि घर औत
आकि घुमत हाट-बजार।
छाती मुक्का मारि लिअ
अपन जिनगी सम्हारि लिअ।
नै तँ अपनो बुड़ले अछि
घरक लोटिया बुड़ले अछि।
जइ बच्चाकेँ भेँट नै हेतै
सालक-साल माए-बाप।
दादा-दादीक कथे कि कहब
मोबाइलेसँ करत क्रिया-कलाप।
कुल-खनदान सभ गेलै अछि
घरक लोटिया बुड़ले अछि।
अंग्रेजी पढ़ि अंग्रेजिया बनि-बनि
पप्पा-मम्मी आनत घर।
बाप-दादाक कि भेद ओ बुझत
अड़ि-अड़ि बाजत निडर।
आबो कहू भाय, केना नै डुमतै
घरक लोटिया केना नै बुड़तै।

जुग बदलल जमाना बदलल

जुग बदलल जमाना बदलल
बदलि गेल सभ रीति-बेवहार।
चालि-ढालि सेहो बदलि गेल
बदलि गेल सभ आचार-विचार।
मुदा, राति-दिन एको ने बदलल
नै बदलल चान, सूर्ज, अकास।
पूरबा-पछबा सेहो ने बदलल
नै बदलल जिनगीक बिसवास।
दुख देखि सभ दौग रहल-ए
पाबए चाहैए सुखक भंडार।
उड़ि-उड़ि पूरबा-पछियामे
लोभक बाट पकड़ि धुरझाड़।
घर छोड़ि घुड़मुड़िया खेलए
दुहाइ कसि मातृभूमिक लगबए।
अपनो जिनगी देखि-देखि
करनीक तँ फलो किछु देखबए।
एक सुग्गा वन बास करैए
दोसर पोसा पिजरा कहबैए।
रहितो पिजरा पोसा सुग्गा
राम-राम दिन राति रटैए।
अपन जिनगी अपने बूझि
अपन बाट पकड़ए पड़त।
अपना जिनगी लेल सदति
जीवन-संघर्ष करए पड़त।
जइ युवामे आत्मबल नै
ओइ युवाक जुआनी केहेन।
अपन हाथ अपने छाती रखि
मुँहसँ अवाज निकलए जेहन।

फँसरी- १

फँसरी लगा धड़ैन लटकलौं
पिताएल मन सभ किछु केलौं।
फँसरी जखन बैसल गरदनि
मन पड़ल दोसर मरदनि।
सुख-दुख मरदनि जनमाबए
संगे दुनू कात हटाबए।
आद्र एक रहितो दुनू
एक दोसरकेँ दूर भगाबे।
लगल फँसरी जहाँ तनाएल
दम फुलि देहो कठुआएल।
गरदनि पकड़ि पोखरि जहिना
हँसि-हँसि हरदा बजबाएल।
जेना-जेना गीरह कसैत गेल
तहिना जिनगी मन पड़ैत गेल।
चक्र चलैत देखि-देखि जिनगी
तड़तड़ा-तड़तड़ा खसैत गेल।
ऐ सँ नीक तँ फाँसी होइ छै
किछु कऽ धऽ कऽ तइपर चढ़ै छै।
घरक फँसरी ॲतरी दुहै छै
हार रस सूधि स्वान पबै छै।

गरीबी

गरीबीक गुरु-आश्रम बीच
भट्ठेसँ पढ़ैत एलौं।
भोरे उठि प्रणाम करै छियनि
मनक असीरवाद पबैत एलौं।
राति-दिन सुरता लगौने
सदिखन चर्च करै छियनि।
उठिते चर्च अपने आबि-आबि
जन्म अजन्मक बात कहै छियनि।
आँखिक आगू गुरु-गरीबीक
सूतलमे जगबै छथि।
दू-दिसिया चालि मनुखक
पकड़ि बाँहि कहै छथि।
अमीर-गरीबक चालि दू-दिसिया
कखनो अमीर, कखनो गरीब बनैत।
भाग्यक रेखा अगम-अथाह छै
हँसि-हँसि सदिखन सुनबैत।
गरीबी सत्-मार्ग चलबैए
हँसि कु-मार्ग अमीरी धड़बैए
भेद-कुभेद भेद बिनु बुझने
सुमार्ग कहि कुमार्ग चलबैए।
जेकरा ढौआ ढन-ढन करए
ओ केना पहुँचत मधुशाला।
चिकड़ि-चिकड़ि गरीबनाथ कहए
भोजन नै छी सुआद मशाला।
अपने हाथे पकड़ि बाँहि
सीमा सरहद देखि चलबैए।
अपन आड़ि-मेड़ अपने पकड़ि
हँसि-हँसि अपन चालि धड़बैए।
जेकरा अहाँ अमीर बूझै छी

नै छिऐक ओ अमीरी।
आ ने जेकरा गरीब बूझै छी
नै छिऐक ओहो गरीबी।
बुद्धदेव किअए राज-पाट छोड़लनि
जँ अभावेकँ गरीबी कहबै।
भिक्षुक बेना पकड़ि किअए
जिनगी भीखमंगाक बनबैए।
गरीबीक जे राह पकड़ि-पकड़ि
राही बनि रनिबास चलैए।
ब्रह्मा, विष्णु ओ शिवदानी
पदे-पद दर्शन पबैए।
यएह गरीबी आ अमीरीक
धड़-धड़ जीवन धार बहैए
सागर-गंगा हराएल कहाँ
तिले-तिल चलैत रहैए।

दबाइये रोग

कहिया कतएसँ रोगाएल
रोगे ओछाइन धेने एलौं।
जी तोड़ि तरद्दुतो करैत
रोगे संग-संग जीबैत एलौं।
रोगो कहाँ छोड़ए चाहैए
अपन ओझराएल-पोझराएल बान
रोगाएल देखि-देखि कहैए
ओ अछिये महा बूड़िबान।
उक्कठ-पाकठ बरमहल करैए
कखनो नै छोड़ए अपन सान।
ताकि-ताकि मीठ दवाइ आनि
गमबए चाहैए अपन जान।
कहै छलै पेट पाचन बिगड़ल
पीबए लगलौं महाजाइम।
आठे दिन अबैत-अबैत
सरदी-बोखार पकड़लक तानि।
कोनो कि एना आइये होइए
आकि होइत आएल जुग-जुगसँ।
जएह पोषक सएह शोषक बनि
लीड़ी-बीड़ी करैत जुग-जुगसँ।
मनुख-मनुखक बीच अड़िया
घुमा बुइध बुधियार बनौलक।
दिन-राति छाँटि-छूँटि आड़ि
साबरमंत्र पढ़ा मुग्ध बनौलक।
मनतरो कि हरही-सुरही
पीठिया-पीठिया मन घुमौलक।
हँसि-हँसि पकड़ि चालि
बुइधसँ यारी करौलक।
छी ठाढ़ बुधियार बनि-बनि

जिनगीक परिचए कहाँ पेलौं।
अपनो जिनगी नै देखै छी
कतएसँ कतए एलौं-गेलौं।
पाँच तत्वक जीवन पाबि-पाबि
जिनगीमे किछु नै केलौं
अकारथ जिनगी बना-बना
बेर्थमे जिनगी गमेलौं।
कि कहब किछु ने फुड़ैए
पीछराह बाट पकड़ि लेलौं।
केम्हरो-सँ-केम्हरो पीछड़ै छी
मृत्युकेँ सदति नतैत एलौं।
भार बना जीवन लीलाकेँ
कुहरि-कुहरि जीबै छी।
आशा-आसी ताकि रहल छी
जिनगी बाट कटै छी।

मुँहक झालि

मुँहक झालि बजौने कि हएत,
काजक झालि बजबए पड़त।
फोकला-खाख अन्ने की
सुभर दाना उपजबए पड़त।
जाधरि धरती पड़ती रहतै
चारागाह दिन-रातियो बनतै।
चरनिहारोक चालि असंख्य छै,
दिन-राति चरबे करतै।
सूर्जे जकाँ ओहो रहै छै
सूर्जेक संग चलबो करै छै।
राति-दिन बेड़ा-बेड़ा
समए देखि चड़बो करै छै।
देहधारी जीवे टा नै
विवेकियो पुरुष कहबै छी
लाज-शर्म जँ उठा-पीबि
तँ अपन बिटारि अपने करै छी।
जँ धरतीपर जन्म लेलौं
किछु देबो किछु लेबो सीखू।
अपने केलहा संग चलै छै
गीरह बान्हि कन्हेठ राखू।
जहिना वनमे वृक्ष बहुत छै
जीवो-जन्तु तहिना भरल छै।
पाँच तत्व निर्मित जे कहबै
पाँचे तत्व विलीनो होइ छै।
बिनु भक्तिक मुक्ति कहाँ
बिनु मुक्तिक जिनगी कहाँ छै।
भक्ति-मुक्तिक बीच बटोही
जिनगीक रसपान करै छै।

मुँहक झालि लहरी नै
कर्मक स्वरलहरी सीखू
अपन इतिहास अपने हाथसँ
स्वार्णाक्षरमे लिखनाइ सीखू।

किछु सीखू किछु करू

जिनगीमे किछु करब सीखू
जिनगीमे किछु लड़ब सीखू।
सभ जनै छी, सभ देखै छी
अज्ञान-अबोध बनि-बनि अबै छी।
सज्ञान-सुबोध तखने बनब
संघर्षक बाट जिनगी धड़ब।
एक-दोसरमे तखन बदलै छै
बीच परिवर्तनक खेल चलै छै।
जहिना रीतु परिवर्तन होइ छै
तहिना कुरीत-सुरीत सेहो बनै छै।
जहिना जाड़ गरमी बदलै छै
तहिना ने गरमियो जाड़ बदलै छै।
पबिते पानि धरती धमकि
नवरंगी रूप बना सजै छै।
जिनगियोक तँ खेल एहिना
अहीमे सभ किछु बनै छै।
कियो भक्त भगवान पबैत
तँ कियो पबैत भगवत् भजन।
कियो योद्धा बनि अस्त्र उठबए
तँ कियो कुकर्म-सुकर्म गढ़ैत।
आँखि उठा घर-बाहर देखू
अपन कालखंड अपने परखू।
पबिते परेखि जीवन-मौसम केर
साओनक सोहनगर सुगंध बिखरू।

पत्नी

सहस्त्र स्वरूप धड़ैत जहिना
ब्रह्म, विष्णु ओ महादेव।
नारी-पुरुष सेहो तहिना
सहस्त्र श्रृंगार करैत चलैत।
ब्रह्म-जीव, माया जहिना
संग रहि संग चलबो करैत।
तहिना ने नारी-पुरुष संग
आदियेसँ चलि आबि रहैत।
सुगरक चरबाहि करैत धर्मराज
राता-राती बना देखौलनि।
माटि सटल ठमकल सुगरकेँ
महींस बना आकास उठौलनि।
बापे घरसँ सीख आबि बेटी
पतिक संग जीवन धारण करैत।
गिरहस्त घरक बेटियो तहिना
घर-परिवारक लूरि-बुइध सिखैत।
एक देश दोसरसँ जहिना
हटल-सटल सेहो चलैत।
तहिना ने गामो-समाज बीच
व्यक्ति-परिवार सेहो चलैत।
पूर्व लूरि संग कन्या जहिना
पतिक सजाएल संग धड़ैत।
तहिना ने सजल-सुकोमल
पत्नीक हाथ लपकि पकड़ैत।
गिरहस्तीक रूप सजबैत पत्नी
बोनिहारक संग बनलीह बोनोहारिनि
जिनगीक भार उठैत देखि-देखि
हृदए खोलि छाती लगौलियनि।
चिन्ता नै उमेरक कनियो

भरिसक लगले-भीड़ले छी।
कनी एम्हर आकि ओम्हर
मस्तीसँ मौज करिते छी।
अपन बूझि करैत अपना ले
जिनगीक धार टपि-टपि बढ़ैत।
कारीगरी संग करुआरि पकड़ि
संग मिलि संगे चलैत।
रंग-बिरंगक पहाड़-पठार बीच
वन-उपवन सोहे सजल-ए।
हर्ष-विषादक बीच बहि तहिना
नजरि नजरिक बीच चलैए।
कियो-लग कियो दूर देखि
थामि-थामि कऽ डेग उठबैए।
कियो दूर-लग दुनूक बीच
झटकि-झटकि सेहो चलैए।

चेतन चाचा

चेत-चेत चलू चेतन चाचा
सरसड़ाइत समए ससरैए।
समए छोड़ि कतबाहि जखने
ठहकि-ठहकि नक्षत्र कहैए।
आगू डेग उठबैसँ पहिने
चारू दिशा देखैत चलू।
चारू कोण ठेकना-ठेकना
आगू डेग बढ़बैत चलू।
जिनगीक बाट सपाट कहाँ छै
काँट-कुश छिड़िआएले अछि।
देखि-थामि पएर रखि-रखि
तिले-तिल ससरैयेक अछि।
ग्रह-नक्षत्र ओ सूर्ज-चान
रूटिंग बनल जेकर दिन-रातिक।
तहिना ने रूटिंगो बनल छै
दैहिक, दैविक ओ भौतिक।
क्षण-पल, सेकेण्ड, मिनट
अछि बनौने सीमा जहिना।
देव-दानव सेहो अपन
बाट बनौने अछि तहिना।
खान-पान पकड़ि चालिकेँ
जहिना जीवन पद्धति बदलैए।
बान्हि मन साधि तन
साधक बनि बनि जीबैए।
साध्य साधि साधन करैत
साधक नाओं धड़बैए।
साधक बनि करैत साधना
भक्त भूमि पकड़ैए।
प्रेमी-प्रेमिका बीच जहिना

प्रेम अपन लीला करैए।
तहिना भक्त भगवान बीच
प्रेमास्पदक पुल बनैए।
सात-समुद्र ओ सात पहाड़
सतरंगी बिजुड़ी चमकैए।
प्रखर ज्योति-सँ-ज्योतिर्मय कऽ
भवसागर पार करैए।

पौरुष

पौरुष पुरुषत्वक सुप्त सुअन
प्रस्फुटित भऽ पुष्पित बनैए।
चढ़ि पवन रथ भरमि अकास
सिख-नख रूप सजबैए।
पाथरसँ निकलि-निकलि
शिखर नीर धारण करैए।
झड़-झड़ करति झहरि-झहरि
हृदए पाताल पकड़ैए।
एक जल पाथर पग पकड़ै
दोसर पकड़ए शून्य अकास।
पबिते प्रेमी हृदए प्रेम मिलि
जूरशीतल पावनि प्रकाश।
सिनेह सिक्त हृदए सटि
ससरि-ससरि ससड़ए सागर।
तरोट-उपरोट माटि मिलि
हृदए सिनेह सजबैत गागर।
माटि जेना सागर सजै छै
पातालो उमड़ै तहिना छै।
हवो कहाँ मानैत छान
पकड़ि बाँहि बिचड़ए लगै छै।
जखने तीनू सम बनै छै
पवन पावक पकड़ै छै।
पानियो कहाँ पछुआए चाहैत
त्रिवेणीक धुन धड़ै छै।
धुने धूनि-धूनि धूर सिरजि
चौड़गर बाट बनबै छै।
लट-पट, सट-पट करैत चलैत
सीमाक पाड़ पकड़ै छै।
टपिते टपान सीमा केर

नव दुनियाँ झलकै छै।
पयस्विनी संग मिलि वसुधा
पाथर पहाड़ सजबै छै।
अनगिनित दुनियाँ बनल छै
ब्रह्म-जीव माया सजल छै।
अनेकानेक जीव ओ ब्रह्म
योगमाया सिरजि सजबै छै।
बनिते संगी संग चलै छै
अनेकानेक दर्शन पबै छै।
कीड़ी-फतिंगी, झाड़-झूड़
सुन्दर शीतल सुख पबै छै।
हरियर-हरियर वन सजल छै
कोमल-किसलय सजल-धजल
जमुना धार बीच बहै छै।
माटि बैसि सौभर ऋृषि
राति-दिन तपस्या करै छै।
बाल्मीकि, भारद्वाज, ऋृगी
निच्चाँ नजरि निहारि रहल।
देखि-देखि धड़नि धारण
मने-मन तड़पि रहल।
पबिते एक-दोसर-तेसर
चारिम संग दौग-दौग
पाँचम केर पछुअबै छै
संग मिलि पाँचो नाचि-गाबि
पंच-तत्व लहरि मिलबै छै।
पाँच तत्व निरमित संसार
संग मिलि सभ खेलाइए।
उदय-अस्त देखैत-सुनैत
अपनेमे समाइए।
पाँच मिलि समाज बनि
पंच परमेश्वर कहबै छै।
वैतरणी तरणि-तरणि

सिर-शिव गंग चढ़ै छै।
दुनियाँक रूप पकड़ि-पकड़ि
ऋृषि-मुनी योद्धा खिंचैत
दलकल-सलकल पिछड़ि-पिछड़ि
छाती मुक्का मारि चलैत।
मुक्को केर तँ अजीब किरदानी
कियो अपने मारए कियो दोसरात
झपटि आँखि पकड़ि बॉहि
धरती धड़बैत तेसरात।

घोड़ मन (भाग-१)

घोड़ मन घोड़छान तोड़ि
चौदहो लोक भरमए लगल।
सातो-सोपान पताल टपि
सातो अकास उड़ए लगल।

समए संग जहिना बिलगैए
मिसरी-मक्खन ओ निर्मल जल
हंसा उड़ि परमहंसा बनि-बनि
तहिना उड़ैत मन देह-स्थल।

स्थूल-सूक्ष्म बॅटि-बॅटि जहिना
दृश्य-भाव कहबैए।
एक्के आँखिये दुनू देखै छी।
अचेत मन भरमैए।

निकलि देह धारण करैए
आत्म-परमात्म दर्शन पबैए।
पबिते दर्शन मगन भऽ भऽ
सूर-तान, वीणा धड़ैए।
मथिते मथानी जहिना
घी-पानि बिलगए लगैए।
जले बीच दुनू समाएल
उठि एक सिर चढ़ए लगैए।
लोहिया चढ़ल आगि बीच जहिना
मक्खन नाचए लगैए।
काह-कूह फेकि-फेकि
पेनी बीच बैसि जमैए।

घोड़ मन (भाग-२)

गोबर घोड़ाइते पानि जहिना
गोबराह रूप धारण करैए
गोबरेक गंध पसारि-पसारि
गोबरछत्ता बनि-बनि छितिराइए।
सुविचार कुविचारो तहिना
छने-छन छीन होइत चलैए।
गिरगिट रंग पकड़ि-पकड़ि
गिरगिटिया चालि चलए लगैए।
गिरगिटिया मनुक्खो तहिना
दिन-राति बदलैत चलैए
गीरगिटेक जहर सिरजि-सिरजि
बीख उगलैत चलैए।
भेद-कुभेद मर्म बिनु बुझने
देखा-देखी ओढ़ैत चलैए
ओढ़ि-ओढ़ि ओझरा-पोझरा
डुबकुनिया काटि मरैए।
गाछक ऊपर डारि बीच जहिना
बॉझी अपन बास करैए
झड़मनुखो मनुख बीच तहिना
उपरे-ऊपर चालि मारैए।
सात समुद्र बीच मनुख
दसो दिशाक दर्शन पबैए
चीन्हि-पहचीन्हि केने बिना
जिनगीक बाट पकड़ैए।

घोड़ मन (भाग-३)

प्रकृतोक तँ प्रकृत गजब छै
सुगंध-कुगंध फूल खिलबैए।
सु-पारखी सुरखि-परखि
कु-पारखी दिन-राति मरैए।
परखिनिहारो परखि कहाँ
परखि-परखि बिलगा चलैत
धार-मझधार बीच
पिछड़ि-पिछड़ि नहिये खसैत।
बेबस मन बहटि-बहटि
सीरा-भट्ठा बिसरए लगैत
जान बॅचबैक धरानी कोनो
लपकि-लपकि पकड़ए चाहैत।
सत्ताक भत्ता छिड़िआएल छै
फानी, फनकी बनि लागल छै।
चिड़चिड़ीक फड़ जकाँ
चूभि पएर टीको नोछड़ै छै।
बिनु पाँखिक हंसा जहिना
तीनू लोक विचरण करैए।
दिन-रातिक भेद बूझि-बूझि
अज्ञान-ज्ञान-सज्ञान बनैए।

घोड़ मन (भाग-४)

आँखि मिचौनी पाश बैसि
ब्रह्म-जीव माया खेलैए।
समए पाबि तहिना ने
अज्ञानो-सज्ञानक चालि चलैए।
होइत आएल आदियेसँ
अज्ञान-ज्ञान बीच संघर्ष
ताधरि चलिते रहत
जाधरि अन्हार इजोत बनत।
पछुआ छोड़ सम्हारि-सम्हारि
अगिला पकड़ैत चलू।
अतीत केर स्मृति बना
समद्रष्टा बनैत चलू।
एक छोड़क बाट देखि
भूत-वर्तमान देखैत चलू।
भविष्य तँ भविष्ये छी
भविष्य-वर्तमान बनबैत चलू।
डेंगी नाह जहिना यात्री
धार पार करैए।
डगमगाइत देह मड़मड़ाइत मन
जीवन धाम पहुँचैए।

अलकक चान

अबिते गाम चमकए लगलै
ताकि तरेगन बिछए लगलै।
ज्योति मिला परखि-परखि
अकास सिर सजबए लगलै।

रंग-रंगक तारा सजल छै
लग-पास संग सेहो हटल छै।
कोणे-काणी सजि-धजि
मोती-कंचन माला बनल छै।

धूप-छाँहक पाश पाबि-पाबि
नब-पुराणक भेद मिटल छै।
धाम ज्ञानक चोला पहिरि-पहिरि
शब्द शब्दक जाल पसरल छै।

मुर्ति जखन कागज उतरि
रूप भगवान धारण करै छै।
झड़ि-झड़ि झहड़ि असल
नकल रूप धड़ए लगै छै।

जहिना कार्बन कॉपी होइ छै
नकल कार्बन चढ़ए लगै छै।
तहिना अरूप-सरूप संग
चुट्टी चालि चलए लगै छै।

जहिना मुसक चालि पकड़ि
मुसरी सेहो घुसकए लगै छै।
जाल-महजाल पकड़ि-पकड़ि
पकड़ि सुत कॉटए लगै छै।

आदिक दुहाइ लगा-लगा
आधि-व्याधि सिरजए लगै छै
मकड़-जालक रूप गढ़ि-गढ़ि
अपने चालिये फँसए लगै छै।

अलकक चान हॉसू पकड़ि
खल-खल सतमी पार करै छै।
अट्टहास अष्टमी केर पबिते
नब-रंग नवमी कहबै छै।

पबिते नौमीक चान अकलक
पुनो दिस ससरए लगै छै।
पुनोक परताप पकड़ि-पकड़ि
पूर-चान कहबए लगै छै।

एक चान यमुना उतरि
महल ताज देखए लगै छै।
दोसर चान पून्यात्मा बनि
आत्म लोक बिचड़ए लगै छै।

डेग-डेग दर्शन पबैत,
डेगे-डेग ससरए लगै छै।
उड़ि अकास धरती पकड़ि
चान-सूर्ज कहबए लगै छै।

प्रीत-रीति पकड़ि-पकड़ि
अपन-अपन बेथा गबै छै
राग-रागिनि राग भरि-भरि
प्रेमाश्रु धार बहबै छै।

जमुनाक जल बनि-बनि
नीर सरस्वती चढ़बै छै।
गाड़ा-जोड़ी करैत दुनू
गंगा बाट बनै छै।

तीनू मिलि तिरवेणी कहबए
सूर-तान-राग भरै छै।
आलाप-परलाप भरैत-करैत
परियाण परियाग करै छै।

शिशबोनी

बुइध-बिचड़ी कऽ पत्नी कहलनि
शीशो लगबैक विचारो देलनि।
नहियो मन, तैयो सुनलियनि
जबाब नै किछु दऽ सकलियनि।
मने-मन विचारए लगलौं
मुँह फोड़ि किछुओ ने बजलौं।
दोहरा कऽ ओहो ने पुछलनि
आगूक बात किछुओ ने कहलनि।
मुदा नजरि निहारै छलनि
पचास गाछ, पिताक देल छलनि।
भोग-भोगि उपटा देलियनि
शीशोक गाछ सठा देलियनि।
बाल-बोध चेतन जब बनतै
माए-बापक किरदानी कहतै।
बाबा-बाप, बेटाक हिसाब
मने-मन सेहो ने जोड़तै।
चलै लए चलनसारि बनल छै
आगू-पाछू सभ चलै छै।
अगिलाक पएरक रेगहा-सिरखार
पकड़ि-पकड़ि पछिलो चलै छै।
जँ उपयोगी बौस नै हेतै
छोड़ैमे असोकर्ज नै हेतै
जँ उपयोगी बौस भविष्यक
कर्म-अधर्म किअए नै हेतै।

बीघा भरिक बाग-बगीचा
बेटा सिर लटकौने गेला।
रंग-बिरंगक फल सजि
बेख-बुनियादि पटकने गेला।

चारू आड़ि अड़िया-अड़िया
अड़कस दऽ आड़ा बनौलनि।
आम, कटहर, बेल, लीची
बीच रोपि, आड़ा शीशो लगौलनि।
नमती-चौड़ी हिसाबसँ
नापि-नापि सभ गाछ लगौलनि
आधा लग्गी नाला खुनि-खुनि
आधा लग्गी आड़ा बनौलनि।
आड़ा खुट्टी ठोकि-ठोकि
जनमाउ बीआ सेहो लगौलनि।
काटि-छाँटि मुँह-कान बना
गाछ पचास शीशो पुरौलनि।
जाधरि जिनगी नीक चलल
शीशो-पांङ जारन चलल
जेना-जेना दिन खिलचल
जारन संग गाछो बिलटल।

पत्नीक पवित्र परामर्श पकड़ि
मने-मन मनन करए लगलौं
मसलि-मसलि मन मथि-मथि
बाल-बोध ले विचारए लगलौं
घुरिया-घुरिया, फिरिया-फिरिया
घुरछी मन लगए लगल।
की नीक की अधला
निहारि-निहारि निहारए लगल।
सु-नीक, कु-नीक बाटे-बाट
रस्ते पेड़ै औनाए लगलौं
बीच बाट अटकि ठाढ़
गुन-धुन करैत विचारए लगलौं।
इंच-इंच भूमि मिलि-जुलि
हीराखान बनल छै
आधा लग्गी पेट काटि

आधा आड़ा सेहो बनल छै।
आड़ा पहेटि-पहेटि पेट भरि
समतल-चौरस बना देबै।
धारी-एक बढ़ा-बढ़ा
तीन धाड़ी शीशो लगा देबै।
कलसि मन फलकि उठल
परामर्श पत्नीक पनपि उठल
लहकैत मन चहकए लगल
प्रभाती पक्षीक सुनए लगल।

पट बना बनेलौं पनिघट
आड़ा पटक माटि बनेलौं
आड़ा-आड़ी सजा-सजा
तीन धाड़ी माला बनेलौं
जहिना आड़िक धार बनै छै
तहिना आड़ि-आड़ बनल
ठामे-ठाम साबे सजि-धजि
तीन धाड़ी पनिबट बनल।
अद्राक अद्रासँ आद्रित भऽ भऽ
शीशोक गाछ पोनगि उठल।
कखनो पानि-माटि पीबि
कखनो पानि-माटि पीबए लगल।
प्रेमी-प्रेमिका चालि पकड़ि
सिरजन सृष्टि करए लगल
बितते बरसात भभा उठल
शीशो गाछ जगमगा उठल
आसिन-आसा पाबि-पाबि
धाड़ी बनि धड़िआए लगल।
साबे ससरि आड़ा पकड़ि
ऊपर-निच्चाँ पसरए लगल।
रक्षक-भक्षक संग पकड़ि
संगे-संग चलए लगल।

जेकरा बकरियो ने पुछै छै
आ कि डरे भीड़ि सटैए।
एक-दोसराक रक्षा करैत
संग मिलि चलए लगैए।

साले भरि बीतैत-बीतैत
धाड़ी शीशोक धड़िया गेल।
मरल लक्ष्मी जीबैत देखि-देखि
हारल मन हरिआ गेल।
बीतते कातिक काटि साबे
अंगने-खरिहाने पसारलौं
आठे दिनक रौद पीबि
जुट्टी गुहि मुट्ठी बनेलौं।
साले-साल जहिना उठए
सड़कि शीशो सड़कए लगल।
देखिते दुरदिन दिन कुदिन
सुदिन दिन कहबए लगल।

सु-दिन दिन अबैत देखि
पत्नीक मन कु-दिन पड़लनि
कुदिन-सुदिन बीच घुरिया
दिन फल पबए लगलनि।
पबिते फड़ जिनगीक
लहरि-लहरि लहरए लगलनि।
प्रेमातुर भऽ बाढ़ि पसारि
छाती-हृदए सेहो जुड़ेलनि।
जइ छाती दूध पिआ बाल
बोध वृक्ष सिरजन करै छै।
अकास उठैत वृक्ष देखि
तड़पैत मन कलशए लगै छै।
तपसी बनि तपस्या केलौं
समए पाबि फलो नीक पेलौं

बोध-वृक्ष रूप देखि-देखि
जिनगीक गुन-धाम पहुँचलौं।
शिशबोनी देखि-देखि मन
उत्साहसँ उत्सुक बनल
प्रेमातुर भऽ प्रेम तहिना
प्रेमसँ प्रेममय बनल।

फगुआ

जुआनीक जे रूप देखबैए
तेकरेसँ ठट्ठा करै छी।
अपन करम-धरम बिसरि
फगुआ हँसि-हँसि गबै छी।
दोहाकेँ कवित्त बना-बना
दोगे-दोग बिहुँसैत चलू।
रचि कविता जोगिरा केर
र- र- र- र- गर्द करू।
रूप सजि करता-करतीक
श्मशान रूप बनबै छी
रस फूल माधुर्य फलक
जी-जान कहाँ चिखै छी।

जहिना सरसो-झुन-झुन करैए
गहुमनिया रंग लपकति रहैए।
केचुआ छोड़ैक मसीम परखि
लपटि-लपटि लपटए लगैए।
ताड़ वीणाक कम्पन्न जहिना
ओर-छोड़ झनकबए लगैए।
तहिना पएरक उठल झुन-झुन
डारि-पात, सिर डोलबैए।

पाबि फागु वसुन्धरा जहिना
अलसाएल-मलसाएल झुमैए।
पाबि जुआनी बिरह तहिना
बिड़हा-बिड़ही बौराइए।
ढोल-डम्फ ताल मिला-मिला
दुनू नाचए-गाबए लगैए।
फड़ल-फुलाएल देखि वसुधा

अकास पवन डोलए लगैए।
चान-सूर्ज बैसि दुनू संग
हिस्सा-बखरा फड़ियबए लगैए।
जहिना पुनोक चान चमकए
मध्य मस्त सूर्ज सेहो हँसैए।

अपन-अपन दशा-दिशा
मिलि दुनू गाबए लगैए।
बामा हाथ थिड़कि-थिड़कि
दहिना चकमक चमकए लगैए।
जहिना जाड़क पाला पकड़ि
शीतल हृदए मिलि जुड़ौलक।
ठिठुरल-ठिठुड़ल पकड़ि कली
वसन्त गीत सेहो सिरजौलक।

शील

द्रवित होइत पानि जहिना
सुख-शील रूप धड़ैए।
तहिना ने गाछो-बिरीछ
फल जीवन, मृत्यु सुख बँटैए।

जे सृष्टि सिरजए वन-सागर
सएह ने सिरजैत वन-मनुख।
बनि मनुष्य बनबास करए जौं
पबैत राम गुण, शील मनुख।

लस्सा-दूध नाम धड़ए एक
दोसर सागर-सरोवर कहबै छै।
लहू कहि-कहि जीव धड़ए
वनमानुख खून मनुष्य कहबै छै।

सुखा खून अपन अस्तित्व
शील-सिरजक कहबैए।
शीले तँ रूप सु-भावक
बढ़ि रूप गुण पबैए।

पबिते गुण भव-सागरमे
गुणी बनि गुण खिंचैए।
छाती लगा बान्हि बाँस
रस्सीक संग सटैए।

शील जखन गुण बनैए
मनुख गुण खिंचए लगैए
गुणी बनि गुदगुदबैत मन
जीवन सुख संचार करैए।

कखनो रस्सा-कस्सी करैत
कखनो ढील-ढाल चलैए।
शीतल-समीर पाबि कखनो
संगे-संग विश्राम करैए।

दिन-रातिक बीच समीर
कुरुक्षेत्र कहबए लगैए।
उनटि-पुनटि, ओंघरा-पोंघरा
रणभूमि सिरजए लगैए।

जे फल पाबि राम बनबौलनि
समुद्र बीच सघन पुल।
तहियेसँ उड़ए लगलनि
रस्ता-बाटक मिझिराएल धूल।

सएह फल पाबि रचलनि कृष्ण
भारतसँ बनैत महाभारत।
हिमालयसँ समुद्र
आ समुद्रसँ कैलाश महादेव

वएह थिक हमर भारत।
भरत बनि भ्रमैत भॅंबर
चरण-सिर धड़ैत जहिना
सएह चरण सुरसरि सिरजि
शिव-कैलाश समाएल जहिना।

पिघलि पाथर जहिना
पाथर वर्फ कहबए लगै छै।
सिरजि शील शीला बनि-बनि
शीला पत्थर कहबए लगैए।

नव रूप सिरजि-सिरजि
जल रूप धारण करैए।
बनि जल-कण उड़ि अकास
हवा संग झुमैत चलैए।

प्रेमी-प्रेमिका बीच दुनू
अश्रु-कण बिल्हैत चलैए।
वएह कण-कणाइत बढ़ि
ओस बनि धरती सिंचैए।

धरिते धड़ा-धरती कन्हुआ
हाथ दुनू छाती सटबैए।
मिलि दुनू सिंगार सजि
वसुदेव रूप धारण करैए।

बनि वसुन्धरा बनि बसुदेव
धार-धाराक धारण धड़ैत।
पबिते जल जलधार बीच
राइ-पहाड़ रूप सजबए लगैत।

बीच-बीच बाट-घाट बनि
रूप श्रृंगार सजबए लगैए।
एक घाट दोसर नदी बनि
झील, सरोवर सागर सिरजैए।

झिलहोरि झील खेलाइत रश्मि
आकर्षित-आकर्षण करैए।
प्रेमास्पद पबिते पाबि
प्रेम-प्रेमी कहबए लगैए।

पाबि प्रेमी प्रेमी जखन
सागर गंगा मिलए चाहैए।
बॉसक पुल बना समुद्र
गंगा-सागर स्नान करैए।

वएह पवित्र जल सागर
कंद पहाड़ बनैए।
बैसि गुफा जोगी-जती
भगवत-भजन करैए।

जहिना भूखल पेट मांगए
तहिना ने मनो मंगै छै।
भोज्यक तृष्णा दुनूक बीच
भजन-भोजन कहबैत चलैए।

बनि शीला समुद्र बीच
पहाड़ बनि-बनि ठाढ़ होइए
शिकारी पहाड़ घूमि-घूमि
मन-माफित शिकार करैए।

सभ दिनसँ होइत आएल
देव-दानवक बीच रग्गड़
रगड़ि-रगड़ि रगड़ैत चलि
मुंडे-मुंड पसरल झग्गर।

झग्गड़ दू दिस चलै छै
एक-रगड़ि सुरधाम बढ़ै छै।
तँ दोसर धरती धारण करै छै।
स्वर्ग-नर्कक विचमानि कऽ
अकास-सँ-धरती खसबै छै।

रंग-बिरंगक सृजित कऽ
दिशा-हीन बनबए लगै छै।
उपदेशक तँ सभ बनैए
अपना ले की सभ सोचैए।

असार-सार संसार बूझि-बूझि
शील-धरम कहाँ बूझैए।
जिनगीक शील धर्म छी
एक दिन धारण करए पड़त।

राम-नाम सत् छी
अंतिम दिन कहए पड़त।

प्रिय

उठिते वेदना उधिआए लगए जब
रच-विचड़ी हुअए लगै छै।
कर्ण-प्रिय, प्रिय वाणी वीणा
रूप माधुर्य सिरजए लगै छै।
दूर-दूर जंगल पसरल
पसरल छै ग्रह-नक्षत्र सागर
तरेगन छिड़िआ-बितिआ
सजबए रूप पठार-पहाड़।
धरती ऊपर शून्य बसल छै
नाओं धरौने अपन अकास।
चुसि रस माटि-पानिक
संग चलैए रौद-वसात।
नै छै ओर-छोड़ अकासक
एक छोड़ धरती धेने छै।
लपेटि-लपेटि लपेटा डोर
विधाता गुड्डी उड़बै छै।
बनि विधकरी विधाता
सिरजन शक्ति जगबै छै।
कर्मभूमि, जन्मभूमि ओ मर्मभूमि
कला-जीवन सिखबै छै।

सुगबा-साड़ी पहीरि देखि कियो
गुणधाम रूप बुझए लगै छै
हंस चालि पकड़ि-पकड़ि
वाहिनी हंस कहबए लगै छै।
चलि चालि हंसवाहिनीक
सुरधाम नचबए लगै छै
सजि केश सुकेसिनी गढ़ि
रूपवती कहबए लगै छै।

गुणवती रूपवती बनि-बनि
गुणधाम बिसरए लगै छै।
गुण पकड़ि जखन सुकेसिनी
धार जमुना सिरजए लगै छै।
कारी रंग पकड़ि-पकड़ि
सिरसिराइत सिर सजबए गलै छै।
शुभ्र-स्वभाव, गुण सिरजि
गुणवती रूप बनबए लगै छै।
गुणवती रूपवती बनि-बनि
गंगा-सरस्वती मिलए लगै छै।
जइठाम तीनू धार सटए
त्रिवेणी घाट बनबए लगै छै।
घाट-स्नान कऽ तीनू सहेली
अलड़ैत-मलड़ैत चलए लगै छै।
भेद-कुभेद मेटा-मेटा
गंगा-सागर जा डुमै छै।

सम्पन्न शब्द, शैली सम्पन्न
शब्द कोष सिरजए लगै छै।
जड़ि-छीप पकड़ि भाषाक
संसार-साहित्य गढ़ए लगै छै।
अपन-अपन अस्त्र-शस्त्र सजि
पथ-प्रदर्शन करए लगै छै।
पथ प्रिय प्रेमी पाबि-पाबि
पथिक पथ चलए लगै छै।
लोक अनेक, दुनियाँ अनेक
पथ अनेक अनेक पथबाह।
अपन खेत जहिना जोतै छै
बरदक संग अपन हरबाह।

बेथा-कथा सम्पन्न गढ़ि,
कवित्त संग मिलि चलै छै

दोहा, चौपाइ, छप्पय ओ कवित्त
संग मिलि कविता कहबै छै।
आँखि, कान, नाक मिलि जहिना
रूप देह सजबै छै।
मुँह बीच जिहिया पकड़ि
वाणी वीणा तार खिंचै छै।
तड़पि-तड़पि मनक बेथा
दुबट्टी ओझर जा फँसै छै।
शब्द वाण जा-जा कहै छै
मुदा ओझर कहाँ बदलै छै।
ओझर जखन चालि पकड़ि
अस्त्र हाथ उठबै छै
कर्मभूमि पकड़ि धरती
शब्दवाण छोड़ै छै।

नख-सिख रूप जतऽ सजै छै
पूर्णिमाक चान कहबए लगै छै।
पूनोक गौरव गाथा कहि-कहि
मास सलोनी पबए लगै छै।
जहिना साओनक सिस्की सिहकए
तहिना सिहकए वीणाक तार।
मनोक तार तहिना सिहकि
सिरजि अपन तहिना उद्‌गार।

जहिना धरती अकास बीच
गाछ-विरीछ लहलह करैत।
तहिना विवेक विचार संग
सदि हँसि-गाबि कहैत।
हजार नाम जहिना हरि
हजार हाथ तहिना सजल छै।
हजार मन सेहो कहैत
हजार कोस भरल छै।

अपनेपर

अपनेपर कनै छी
अपनेपर हँसै छी।
अपने दिस तकै छी
अपने नै देखै छी।
घुरि पाछू जखन देखै छी
जुगक अनुकूल समाज देखै छी।
ऊपरे-ऊपर नीपल-पोतल
भीतरमे कंकाल देखै छी।
ओही समाजक बीच बसल
अपनो पुरुखाक इतिहास पबै छी।
बिहिया-बिहिया बिहियबिते
ढहल-ढनमनाएल देखै छी।

निश्चित सीमा बीच गाम
निश्चित जाति बान्हल छी।
टोलबैया कहि निश्चित जातिक
पतिआनी लागि सटल छी।
सटल-सटल पतिआनीक बीच
हटल-सटल सेहो पबै छी।
सटल-हटल आ कि हटल-सटल
गामक थाह कहाँ पबै छी।

चौहद्दी बीच कत्तौ समाज
कत्तौ जाति समाज कहबै छी।
कत्तौ-कत्तौ पुरुखक समाज
तँ कत्तौ सम्प्रदाय समाज बनै छी।
उठिते नजरि भूत-भविष्य
सिहरनसँ सिहरए लगैए।
अकारथ जिनगी देखि पाबि

कुहरि मन तुरछि मरैए।

अगम-अथाह रूप समाजक
असथिर भऽ सागर कहबैए।
बर्खा बुन्नी बीच-बीच
ओला-पाथर बरिसा दइए।
पबिते पाबि पृथ्वी पसरि
धरिया-चालि धड़ए लगैए।
उट्ठी-बैसी खेल खेलैत
मोइन-धार बनबए लगैए।
टूक सुपारी समाज कटि-कटि
टुकड़ी जाति बनल छै।
टूक-टूक जातिक धरम
धर्म-मानव कात पड़ल छै।
कल्याणक पर्याय धर्म कहबए
कल्याणक दुश्मन बनल छै।
दृष्टिकूट सिरजि दुर्ग-बीच
अलग चित्त चौनाल खसल छै।
देखि-देखि कुहरै छी।
कुहरि-कुहरि सिहरै छी
सिहरि-सिहरि सिसकै छी
सिसकि-सिसकि ठुनकै छी
ठुनकि-ठुनकि कनै छी
अपनेपर कनै छी
अपनेपर हँसै छी।

तँए कि कोनो हारि मानै छी
भाग्य-तकदीर सिरजै छी।
ज्योतिषक ज्योति पजारि-पजारि
कर्म-लेख लिखैत चलै छी।
जेकर जेहेन भाग्य बनल छै
तेहने तेकरा फल भेटै छै।

फँसि-फँसि शब्दजाल कर्म
गीता गीत सुनबए लगै छै।
पढ़ि गीता बौरा कियो
चिन्तक बनि चिन्तन करैए।
पागल कहि पुक्की दए-दए
बौराहा रूप गढ़ैए।
सभ किरदानी देखि-सुनि
मदनारी शिव कहबैए।
कियो भांगिया-भिखारी मानह
शिवदानी शिव कहबैए।

डायरी

मनक डायरी लिखए बैसलौं
उपहारक डायरी निकाललौं।
रंग-रूप देखि डायरीक
ऊपरे-ऊपरे भसए लगलौं।
भसैत-भसैत-भसैत
मनक बात बिसरए लगलौं।
छपल फूल गुलाब कली
बिहिया-बिहिया देखए लगलौं।
सुर-सुर करैत सुरसुरी आबि
नाकर छोर खिचए लगल।
रस-गंधक भूख जगा
भूखल मन तरसए लगल।
ताकए लगलौं रस कलीमे
सादा कागज बनल-पड़ल।
सीख-लीख नै परेखि पेलौं
अखनो ओहिना बैसल पड़ल।

गुन-गुन गुनगुनाए लगलौं
जगल अपन डायरी मनमे
हाँइ-हाँइ पन्ना उनटेलौं
कलम खोलि विचारल मनमे।
तही बीच आँखि पड़ल पन्ना
चार्ट बना टांगल देखल
अपन मनक चार्ट नै देखि
अदहन मन उधिआए लगल।

आखर अंतिम मन पड़िते
कलमक हाथ घुसकए लगल।
अनका असे कते दिन बीतल
मनक हिसाब उठए लगल।

मानव गुण

जाधरि गुण नै अबैत मनुजमे
ता धरि मनुज मनु रहैए।
अबिते गुण फल-फूल जहिना
नाओं अपन धड़बए लगैए।
जाधरि फूल महक नै पबैत
कोढ़ी-वाती कहबैत रहैए।
तहिना ने मनुखो बीच
मनुष्य-मनुख कहबैत रहैए।
गुण अनेक समेटि आठ
पौरुष गुण कहबैए।
पबिते पाबि बनैत गुणी
महापुरुष बनए लगैए।
जहिना-जहिना गुण बढ़ै छै
तहिना-पुरुखपनो बढ़ै छै।
अबिते पौरुष तन मनुजमे
महापुरुष कहबए लगै छै।

तीन गुण आदिये सँ आबि
सत्-रज-तम कहबैए।
तामस-प्रीति मनुखेटा नै
पशु-पक्षी सेहो पकड़ैए।
जहिना-जहिना पशु-पक्षी बीच
गुण तीनू गुणगान करैए।
एक-दोसरसँ हटि-सटि
कामी-लोभीक रूप धड़ैए।
बिना किछु कहनौं-सुननौं
बीख बमन सदति करैए।
गहुमन चालि बूझि देखि
मनुष्यत्व डरए लगैए।

मुदा टोननिहार मनुखो होइ छै
उपाए तेकर सोचए लगैए।
मंत्र-जौड़ सीखि-सीखि
चित्ती-कौड़ी भॉजए लगैए।
भजिते चित्ती-कौड़ी धरती
गरुड़ चालि पकड़ए लगैए।
चारू दिशा नजरि दौगा
अकास बीच उड़ए लगैए।
उड़िते अकास देखए लगैत
बील-धोधड़ि वृक्ष-धरती
एक अकास दोसर पताल
जागल वृक्ष सूतल धरती।

जहिना बरही काठ खोदि
उखड़ि ढोलक कठरा बनबैए।
तहिना ने कठखोधियो खोदि
हीर काटि धोधड़ि बनबैए।
रक्षित सुरक्षित भवन बीच
चैनक जिनगी बास करैए।
निच्चाँ धड़तीक बोहरि देखि-देखि
सुख-सेजि विश्राम करैए।
ने डर पानि ओ पाथर
हवो ने किछु कए सकैए।
धरती सहजहि पड़ल-सूतल
भयये किअए भऽ सकैए।

मुसक खुनल बील पकड़ि
नाग-नागिन कहबए लगैए।
नागे तँ धरती टेकने छै
अखण्ड राज भोगै छै।
जेकरे बनाओल घर बसै छै
तेकरे पकड़ि भोजन करै छै।

सुख-पतालक पाबि-पाबि
अकास-पताल लोक गढ़ैए।
भोगी जोगी बनि-बनि
मंत्र सूत्र गढ़ए लगैए।
सुर्जो-चानक गति-मतिकेँ
रगड़ि-रगड़ि मेटबए लगैए।
कहियो बादर पकड़ि
मेघाओन रूप धड़ए लगैए।
तँ कहियो देव-दानव ठर्ड़ा
बेबस भऽ देखए लगैए।

छूटि गेल

पाछू घुरि जखन देखै छी
मरूभमि भेल गाम देखै छी।
गंगोट मानि सिर सजि
चानन करैत अनैत रहलौं।
बालुक बुर्जा बनल बाध
देखि-देखि कुहरैत रहलौं।
जइ पानिक बीच बसल छी
तरो पानि तरहथियो पानि
वायुओ पानि बसातो पानि
उड़ल अकास दौड़तो पानि
तइ पानिक बीच काहि काटि
पानिये बिनु छटपट करै छी
कत्तौ चुटकियो नोन नै
कत्तौ-कत्तौ सागर बनल छै।

दुनियाँक दोखाह वसात
दुरि केने छै दुनियाँकेँ
बिनु कल-कारखानाक मिथिला
दूषित भेल अछि हावासँ।
देश-दुनियाँक कारखाना चला
खेती-पथारी सेहो करैए।
अपन सभ किछु उपटा-बिलटा
मिथिलाक जय-जयकार करैए।

भाषा साहित्यक कथे की
नमगर-चौड़गर बान्ह कसल-ए।
करे मुसबा पकड़ए युनुसबा
दिन-रातिक लीला चलैए

जननिहार सभ किछु जनै छथि
मुदा पेट पकड़ि पेटकान देने
सभ-सबहक मुँह देखि-देखि
लेने-लेने कि देने-देने?

मरल घाट

बहुरंगी विश्व बजार बीच
रंग-बिरंगी घाट बनल छै।
घाटे-घाट घटबाह बैसि
बैतरनी पार करैत रहै छै।
बुझल गमल जेकरा छै घाट
हेलि-डूमि अपने पार करैए
जेकरा नै छै बुझल-गमल
गुड़गुड़-गुड़गुड़ गुड़कि मरैए।
बुझलो रहते केना सभकेँ
घाटो कि गानल-मानल छै
फूल भालसरि माला जकाँ
गानल गूथल सगर पड़ल छै।
जहिना रंग-बिरंग पोखरिमे
रंग-बिरंगक घाट बनै छै।
संगमरमर सहित चानन लकड़ी
खाढ़ी बनाओल धोबिघाट बनै छै।
पुरुष-घाट नारी-घाट संग
शौच-घाट सेहो बनल छै।
गंगघाट संग सहित
मुर्दघाट सेहो बनल छै
झील-सरोबर सेहो सजौने
नाओं अपन धरौने छै।
अपन नाह अपने खेबि
अपन घाट अपने टपबै छै।
जहिना झील-सरोवर घाट
तहिना सागरो गर लगौने
ज्वार उठा लहरि-टहलि
धारा धार सदति बनौने।
जहिना सबहक चित्र-विचित्र

तहिना चित्र-कूट सेहो बनल छै।
जोगी-जती-तपी-संयासी
कूट-घाट स्नान करै छै।
घाट चित्र विचित्र बनल
पीच्छड़-छीछलाह सेहो सजल छै।
छिछलि-छिछलि पिछड़ि-पिछड़ि
ओंघरनियाँ दऽ दऽ खसै छै।
खसि-खसि पाछू कियो ढुलकए
कियो आगू छिछलए लगै छै।
जमघट लगल सजल घाट
एक्के-दुइये पार करै छै।
जहिना फोटो फोटोग्राफर बना
नेङराकेँ दौगबए लगै छै
तहिना ने दौगनिहारोकेँ
घीचि पएर पाछू खसबै छै।
चित्र-कूट घाट विचित्र छै
कूट चित्र पहाड़ बनल छै।
उतरि रूप कागज पहाड़
तहे-तह पोथी बनल छै।
तीन घाट किनछड़ि बनल
जीवित, अधजीवित मृत कहबै छै।
तहिना तीन बनल जिनगी
ईर-वीर-तीर घाट कहबै छै।
तीनू घाट नहेनिहार जे
पोखरि प्रवेश करै छै
शीतल-शान्त, स्वच्छ जल मध्य
प्रतिदिन स्नान करै छै।
नै जीवित नै मृत घाट ओ
अधमरू भेल पड़ल छै।
सु-लोक लोक कहि-कहि कु-लोक
भैंसी-भैंसी स्नान करै छै।
मुदा, शौचघाट अखनो जीबै छै।

दिन-प्रतिदिन लीला करै छै
एक घाट रहितो अनेक
अशुद्ध-शुद्ध बनैत रहै छै।
कखनो अशुद्ध शुद्ध बनि
शुद्ध-अशुद्ध बनैत रहै छै।
गोरा गर पकड़ि अशुद्ध
ताल-मेल बैसबैत रहै छै।
जहिना तीनू ताल चलै छै
तहिना तीनू मेल धड़ै छै।
ताल मेल बुझब कठिन
तीनू रंग बदलैत चलै छै।
जहिना काग-दोष खेल अंडीक
पल्ला-जोड़ा रूप धड़ै छै।
तहिना लघु-गुरु खेल पसारि
हँसि-हँसि व्याकरण बजै छै।

घोबिघाट जहिना बनल छै
शौचोघाट तहिना कतिआएल छै
जगह बदलि स्नान घाट
भाग दोसर पकड़ने महार छै
सभ महार सभ घाट बनि
पोखरियेक घाट कहबै छै।
माटि-पानि मिलितो-जुलितो
फुट-फुट घाट कहबै छै।
जखने नल-कल-टंकी बनल
घाट स्नान सहरए लगल
हहरि-हहरि हिहिया-हिहिया
हारि-हारि हरिहर बनल
भेँट नै जेकरा नल-कल-टंकी
पोखरिक घाट पकड़ने छै।
शुद्ध-अशुद्ध विचार बिनु केने
गर पाबि पकड़ने छै।

जहिना आसिन मास छोपि
खेत धान किसान अनै छै।
क्षीण-मस्तिका सदृश चास
झाँट-पानि बरदास करै छै।
बिनु छप्परक घर बीच जहिना
बाल-बच्चा संग जीबै छै।
छल-प्रपंच भेद नै बूझि
आस भगवान लगबैत रहै छै।
रस भरल रहस्यमय भगवान
सदिखन नाच करैत रहै छै।
जे जानए तेकरे देखि-देखि
फूल-अच्छत बँटैत रहै छै।
फूल अच्छत चिन्हए जे जानए
सहए सभ राति-दिन पबै छै।
चिन्ह बिना औषध भारी
हारि-थाकि कहैत रहै छै।
हारियो-जीतक चालि विचित्र
चीत-पट संग उनटै-पुनटै छै
कनी एम्हर आ कि ओम्हर
हारि-जीत कहाँ कहबै छै।
ससरि-ससरि ससरए कियो पाछू
दनदनाइत कियो आगू बढ़ै छै।
रेखा विषुवत बनल घड़ी
बाम-दहिन कहबए लगै छै।
दुनू भाग बाट बनल दोहरी
दूरे-दूरे देखैत रहै छै।
सभ किछु मिलतो-जुलितो रहने
ॠतु परिवर्त्तन कहबए लगै छै।
ॠतु परिवर्त्तनक रूप विचित्र
चान-सूर्ज गहिया धड़ै छै
गहे-गह ससरि-ससरि
रीति-कुरीति बनबए लगै छै।

बनि-बनि कुरीति-नीति
धारण-धर्म कहबए लगै छै।
देश-बेश बना-बना
परिवेश पैदा करए लगै छै।
मौसम गति मौनसुनी
जीवन ठौर धड़बए लगै छै।
कम-सम नै, भेल बहुत
रहि-रहि इतिहास कहै छै।
वाणी-बोली रूप बदलि
राति-दिन ललकार भरै छै।
गामे-गाम धार-पोखरि बनि
रंग-बिरंगक फूल उगल छै।
धरती पानिक मध्य बीच
थाल-कीच सेहो बनल छै।
घाटक थाल ससरि-ससरि
बगल पानि पसरल छै।
चिक्कन पानि चमकए जहिना
धरतियो तहिना चमकै छै।
ऊपर-निच्चाँ खाढ़ी पकड़ि
दूनू-दुनू दिस देखै छै।
नजरि पकड़ि मिला नजरि
पवित्र पवन सिरजै छै।
गोपी संग केरि करए कृष्ण जना
तहिना जल-धरतियो करै छै।
हृदए खोलि तान भरि-भरि
धुन बासुरी सुनबै छै।

हल्लुक काज

काजक हल्लुक लूरि पाबि
फल आनन्द जीवन पबै छै।
कलाकृत्ति पाबि कलाकार
आत्म तुष्टि गढ़ए लगै छै।
काज-धार बीच जिनगीक नाह
दिन-राति अनवरत चलै छै।
पबिते पहर रूप बदलि
कर्म-काज कहबए लगै छै।
रूप बदलि काज जहिना
कर्म सरूप बनै लगै छै।
तहिना कर्मो ससरि-पसरि
धाम कर्म पहुँचै लगै छै।
धर्म-धाम पहुँचिते पहुँचि
चन्द्रकूप स्नान करै छै।
करिते स्नान पाबि पवित्र मन
चलि पर्पण श्रृंगार करै छै।
जइ मन भावे तइ भावसँ
भावनाक संसार गढ़ै छै।
आसन मारि सिंहासन चढ़ि
शंखनाद पूजा करै छै।
जही सूत्र जीवन सिरजए
सूत्र सएह कर्मो सिरजै छै।
सूर्जक सूत्र मिलि बैसि
कर्म-सूत्र कहबए लगै छै।
कर्म-धर्म जहिना बनए
कामो-धाम तहिना कहबै छै।
सृष्टिक गुप्त रहस्य देखि
समर्पण जीवन करै छै।

जिनगीक बोझ पहाड़ बनल छै
धरतीसँ अकास सटल छै।
पथरा-पथरा रूप अपन गढ़ि
धरतीक कहाँ भार बनल छै।
अपन गर रोपि-रोपि अपने
पएर तपल पसारने छै।
रसे-रसे रिसैत-पिसैत
श्रृंग अकास पकड़ने छै।
रंग-रंगक रूप गढ़ि-मढ़ि
नाओं पहाड़ धरौने छै।
समुद्र बीच जहिना जलचर
तहिना थलचर जीवन पबै छै।
धरती-अकास, अकास-धरती बीच
चोटी शिखर बनल छै।
पथक संग पथिक सटल छै
दोहरी दिशा पकड़ने छै।
शिखा चढ़ि सिर कियो पूजैए
कियो भॅंसि भट्ठा भॅंसिआइ छै।
निहारि-निहारि शिखर पहाड़
मने-मन पचताइ छै।
कर्मोक तँ चित्र विचित्र
हल्लुक-भारी चालि चलैए
एक सिर धर्म कहबए
दोसर धाम धकहबैए
काम-धाम आ धर्म-कर्म
प्रेयसी बनि श्रृंगार करैए
जहिना बहीर अपने काने
जीवन रंगमंच नचैए।

हल्लुक माटि बिलाइ जेना खुनए
जिनगीयो तहिना खुनए लगै छै।
खुनि-खुनि ससरि-ससरि

उनटा चालि धड़ए लगै छै।
आगू-पाछू धार बीच जहिना
सिरा संग भट्ठा कहबै छै।
धार जिनगियोक तहिना
भूत-भविष्य बहैत रहै छै।
सुचि पकड़ि कान जहिना
हल्लुक बनि-बनि गढ़ए लगै छै।
तहिना हल्लुक रूप बदलि
अलिसा-अलिसा कहए लगै छै।
अलिसाएल-मलिसाएल काज सिरजि
निच्चाँ जिनगी ढुलकए लगै छै।
आगू-पाछूक दिशा बिसरि
धरती-पएरक देखए लगै छै।
दिने-राति जकाँ जिनगियो
सु-समए-कु-समए अबैत रहै छै।
नीक-अधला सूत्र बीच
लटकि-फटकि चलैत रहै छै।
मन-कर्म-वचन कहबी बनि
कल्पना उदाहरण बनल छै।
कल्पना कल्प रूप जहिना
तेहने रूप सजल छै।
भारी-हल्लुक काज बीच
सूतल-जागल जिनगी पड़ल छै
जीवन बूझि कियो जिनगी
कियो घनघोड़ घोड़ाएल छै।

बीघा भरि चास-बास

चौथापन पकड़िते देखि
छिड़िआएल मन समटाए लगल।
चतड़ल गाछक डारि-पात सूखि
धड़-सिर, मुसरा बँचल रहल।
दुनियाँदारीक ताम-झाम छोड़ि
अपनेमे समाए लगलौं
साठि सालक गुजरल जिनगीक
बैसि हिसाब बैसबए लगलौं।
पिताक देल पाँच बीघा छल
बीघा एक बचेने रहलौं।
भूल भेल कि चूक भेल
अपनेमे विचारए लगलौं।
गर-कुगर देखि-देखि
मन तरे-तर मसकए लगल।
गर-सुगर अबिते आबि
मसकल मन मुसकए लगल।
सभ दिन देव दहिने रहला
दूसँ दस परिवार बनल।
तखन किअए पीपनी फड़कैए
ज्योति आँखि चमकए लगल।

बेटाक आस-बाट देखि
सात सखी आबि धमकल।
नि:संतान जँ छी अपराध
दबकल मन उठि बमकल।
पत्नियोकेँ धन्यवाद दियनि
कहियो नै हिआ हारलनि।
आठ संतानक माए बनि
संगिनी बनि संगो पुड़लनि।
शाखा-प्रशाखा देखि जहिना

समपन्न जिनगी वृक्ष पबैए।
तहिना ने मनुष्योक
शखा-सखी वंश बढ़बैए।
केना कऽ कहबै हारि गेलौं
अकारथ जिनगी बनेलौं
मुदा जीतबो केना केलौं
मनमे विचारए लगलौं
अजीव पाश पाशा चलल
क्षय सम्पति परिवार बढ़ल।
दूसँ दस बनि-बनि
पाँच बर धन-बुइध बढ़ल।

पाँचम कन्या अबैत-अबैत
पहिल कन्यादान केलौं
आइली-बाइली आमद नै
दस कट्ठा जमीन बेचलौं।
जएह सभ कर्म-धर्म लेख लिखए
सएह दुरदिन पैदा करैए।
सुदिनक दोहाइ दए-दए
खलखला गरदनि कटैए।
समए संग अपने ससड़लौं
सातो बहिन सासुर पठेलौं।
चारि बीघा भूमिदान दऽ
सातो कन्यादान केलौं।
जहिना आठम संतान कृष्ण
तहिना आठम बेटा भेल।
पाँच बीघाबला बापकेँ
बीघा भरिक बेटा भेल।
लोकक मोल भलहिं घटए
खेतक मोल बढ़ल छै।
लूरि-बुइध संगे मिलि दुनू
खेत-सवारी चढ़ल छै।

पट्टा छीमी

लाले-लाल खेत देखि
माइक मन सिहकि उठलनि।
बाधक बाट बगलि बगल
खेत केराओक घीचि अनलकनि
रंग-रंगल चास देखि
चासनी चित्त चहकि उठलनि
बाधक बाट बगलि बगल
महक चास अनए लगलनि।
लह-लह लहलहाइत लत्ती
सन-सन करैत आकस देखैत
रेगहा सिरखार सजि-सजि
रंग-बिरंग फूल देखबैत।
बाला जहिना वय:संधि टपि
बाला कन्याँ कहबए लगैत
तहिना लत्ती केराओक
रूप अपन सजबए लगैत
सजि-सजि श्रृंगार श्रृंग
झड़ि-झड़ि झड़ैत अधफूल।
दुख कहाँ होइ छै कखनो
मनमे पीड़ा मिसियो भरि।
फुलपत्ती उड़िया-उड़िया
अकास सिर चढ़ल छै।
गंध पसारि-पसारि अकास
अनको आकर्षित करै छै।

आड़ि मेड़ टपैत चासनी
चास केराओक निहारए लगली
रंग-सुरंग सजल लत्ती
रंग जिनगीक देखबए लगली।

हरिअर-हरिअर डारि पात
मुँह मोती चमकै छै।
उज्जर-लाल फुलाएल फूल
निच्चाँ छीमी बनल छै।
पौती जहिना रूप गढ़ै छै
तहिना छीम्मी बनैत रहै छै।
रस-फूल ससरि ससरि
रूप दाना गढ़ए लगै छै।
छिलुका दाना सहजि-सहजि
छीमी नाओं धड़बए लगै छै।
पाकल जुआएल चर्च बिनु केने
पट्टा छीमी कहबए लगै छै
पट्टा छीमी खट्टो होइ छै
मीठो तँ हेबे करै छै।
जहिना समरस बनि फूल-फल
रूप समदर्शी धड़ै छै।
छिलुका-दानाक अगाध सिनेह
संग मिलि भक्छ बनै छै
अपन-अपन बेवहार बिसरि
मिलि संग जीवन दान करै छै।

बदरीहन

बदरीहन समए बीच जहिना
अमवसिया राति अबैत रहै छै।
कलि-कलिमल वसन ओढ़ि
कालिंदी कूल सजैत रहै छै।
पक्ष इजोत अबैसँ पहिने
अन्हार पक्ष छेकने रहै छै।
अन्हरा-अन्हरा अन्हार बीच
बाट इजोत हराएल रहै छै।
चौबीसो घंटा दौड़-धूप
राति-दिन, दिन-राति खेलैत रहै छै
चढ़ि-उतरि समए संग-संग
अपन गतिये खेल खेलै छै।
बराबरीक भाग लगा-लगा
सालक बीच हिसाब जोड़ै छै।
बाट-घाट आगूओ-पाछू
पहुँचि लक्ष्य निसांस छोड़ै छै।
समए-साल देखियो सुनि
मास नै पूरा पबै छै।
हारि-जीत मध्य जिनगी तहिना
मानि माइन पबैत रहै छै।
जहिना दिनेक राति बनि-बनि
राति-दिन कहबए लगै छै।
दिने-राति, रातिये दिन
मिलि-जुलि सिरजए लगै छै।
अंत पहाड़ श्रृंग ठेकि अकास
सिंगार रूप सजबए लगै छै।
ऊपर धरती सजल-धजल
गड़ूगर पएर ससरए लगै छै।
ससरि-ससरि, हटि-हटि

रसे-रसे कात हटै छै।
सिर बिनु धड़, धड़ बिनु शीश
चिन्ह-पहचिन्ह बिसराइ छै।

मौसम पाबि मौसम जहिना
ऋृतु परिवर्तन करैत रहै छै।
जिनगी मनुष्योक तहिना
बीच बेवस्था बदलए लगै छै।
कहियो रौदमे डाहए
तँ कहियो पानि-पाथर बरिसाबए।
ओस-पाल बनि-बनि कहियो
हृदए बीच छाती दलकाबए।
मध्य धार बीच जहिना
मुँह-धार कहबै छै।
तहिना बेवस्था बीच समाज
मुँह-धार बनबै छै।
जेहेन मुँह-धार समाजक
तेहने धार पकड़ि-चलत।
दुख-बेथाक बोन-झाड़केँ
खलखला-खलखला कटैत चलत।

बालि वध

बोधि गाछ ताड़क जे सातो
गेरूलाकार लगल छै।
सातो बेधि जे वाण निकलि
आदि-बालि वध करै छै।
पीठ नाग सजल सातो
ताड़ गाछ कहबैत एलैए।
सातो घोड़ा सजि-बनि रथ
सारथी बनि देखबैत एलैए।
नाग-नाक ऊपर पएर जखने
कसि-कसि भार दबै छै।
छटपटा सोझ होइत-होइत
वृत्त-आवृत्त बनए लगै छै।
होइत सीध नजरि हिया
लक्ष्य बनि देखए लगै छै।
कोणा-कोणी कोण-वाण
समधानि छाती बेधए लगै छै।
बगलि वृक्ष राम जहिना
हिया-हिया आगू देखलनि
सटा छाती तानि धनु-वाण
छाती बालिक कसि कऽ बिंधलनि।

त्रेते नै जुग-जुगान्तरसँ
बेश बालि पनपैत एलैए।
शर्त्त राक्षस देव पकड़ि-पकड़ि
संकल्प सात गढ़ैत एलैए।
शासक-शासित पक्ष दू बीच
झगड़ा-मिलान दुनू चलै छै।
नीक-अधलाक विचार करैत
संगी-दोस बनैत चलै छै।

अनेरुआ वन

जुग-जुगसँ जनमैत एलै
जंगल वन लगैत गेलै।
गुण-अवगुण बिनु बिलगौने
संग-संग सहेजति गेलै।
जे जेना-जेना जगैत उठल
से तेना-तेना जगजिआ लगल
जे जेना-जेना पछुआए उठल
से तेना-तेना पछुआए लगल।
मुदा नै, आरो किछु भेल?
आगुओ उगल पछुआए लगल
पाछुओ उगल अगुआए लगल।
ने सबहक कद-काठी समान
ने सूर्जक दिन-रातिक मान।
मान-समान समतल बिनु
किछु दबि किछु फुफुआएल।
कान्ह मिला देखि-सुनि
तरसि-तरसि झुझुआए लगल।
तहिना मनुक्खोक बीच वन
रंग-बिरंग चतरल अछि।
दुभि-लत्ती ऊपर पेड़ पसरि
तँ लत्तियो गछाड़ि चतरल अछि।

फँसरी- २

फँसि फँसरी लटकि धरनि
पीड़ाएल मन तमसाइत केलौं।
रस जिनगीक बुझि नै पाबि
करनी अपने मरनी बनलौं।
ओझरी तनि-तनि दाबि गर-गड़
ऐँठि-ऐँठि केलक मन मरदनि।
होइत मरद करजनि देखि-देखि
लुत्तिया-लुत्तिया केलक गरजनि।
जिनगीक दोहरी बाट बनल छै
बड़की-छोटकी नाओं कहै छै।
बड़कीपर बड़की चलै छै
छोटकी-छोटकी छिछिआइ छै।
उठि भोर धार धड़ि दुनू
संगे-संग चलबो करै छै।
मारि-आँखि बड़की छोटकी
गर-फाँस लगबैत रहै छै।
गरदनि पकड़ि पछाड़ि पानि
हरदा-हरदी बजबए लगै छै।
हारल-मारल आकि मारल हारल
फाँस गर लगबैत रहै छै।
फँसरीसँ नीक फाँसी होइ छै
कऽ धऽ किछु चढ़ैत रहै छै।
पूब-उत्तर देखि निहारि
हँसि-कानि गाबैत रहै छै।

विचलित मन

पार्टनर, मुँहगर केना नै बनबै?
छअ-पाँच दिन राति करै छी
भंग अंग मुखतियारि करै छी
घोरि-घाड़ि घिसिआइत चलै छी
कहिया धरि एना चलबै
पार्टनर, मुँहगर केना नै बनबै।
कठरा लकड़ी तबला बनै छै
ढोलक-ढोल सेहो बनै छै।
रस-कुरस पकड़ि-पकड़ि
कारीगर मुँह सेहो बनबै छै।
अहाँ छोड़ि केकरा कहबै
पार्टनर, मुँहगर केना नै बनबै।
कियो मुँहक झालि सदि बजाबे
तँ कियो सूर मुँह भरै छै।
अलापि तान कियो कहै छै
जय-जयकार कियो सेहो करै छै।
तइ बीच केना कऽ चलबै
पार्टनर, मुँहगर केना नै बनबै।
मुँहक तान मान मपै छै
पलड़ा जोड़ लगबैत रहै छै।
मूंग्गा, जअ बाट बना-बना
तीन लोक भूभाग तौलै छै।
तइ बीच केना कऽ बचबै,
पार्टनर, आबो कहू कि करबै
पार्टनर, आबो....
दुनियाँक रंगमंच सजल छै
राशि-राशि दृष्टि बनल छै।

मेलाक हाट-बजार बीच
कारी मुँह चून केना सजेबै
कारीख-चून लगेबै,
पार्टनर, कारीख-चून लगेबै।

गुड़ घाव

उपकि-उपकि गुड़ घाव
तन-तन, फण-फण करए लगल।
सगर शरीरक आसन बनि
थइर अपन बान्हए लगल।
संग दिनक बढ़ि-बढ़ैत
गुड़ घाव कहबए लगल।
पसरि-पसरि फोँसरी पसरि
सुख-दुख पीड़ रचए लगल।
समए संग ससरि-ससरि
पेड़-फेंड़ बनबए लगल।
जड़ि एक रहितो रहैत
फेंड़ जोड़ लगबए लगल।
संगे मोजरि, फुला संगे
संग-संग फलो रचए लगल।
संगे-संगे संग चलि
आशा फल देखबए लगल।
आश बास देखि-देखि
तिरपित मन सिहरए लगल।
रक्त भक्त बनि पीब
पकि पीज निकलए लगल।
छेदि देह पकड़ि मांस
खील बनि खिलए लगल।
पबिते खील खिल-खिला
राति-दिन टहकए लगल।
टहकि-टहकि घुसकि-फुसकि
मासु हार पकड़ए लगल।
पीड़ा हारक हू-हू-आ-हूहूआ

गरजि-तरंगि निकलए लगल।
हारक पीड़ मासु-पीज संग
दर्द मन बेदर्द बनल।
चिन्ह-पहचिन्ह हराएल देखि
हारल-हराएल बेड़बए लगल।

एकटा बताह

जे जनकक संतान कहियो
कृषि वृत्ति किसान छलाह।
कृषि कुशल कहि-कहि
दिन-राति मलड़ैत छलाह।
भुमकम बाढ़ि रौदीक भार सहि
जीवन-यापन करैत छलाह।
वेद-बखान नित-प्रतिदिन
साँझ-भोर रटैत छलाह।
गति समए केर बीच-बीच
दोरस हवा उपकए लगल।
नव-पुरान बीच-बीच
रंग-रूप बदलए लगल।
रंग-रूप बीच रंग भेद
पनपि-पनपि पनपए लगल।
सोहरि-सोहरि उठि-उठि
धन-गर्जन करए लगल।
साहोर-साहोर मंत्र जपि
डंका-ठनका बचए लगल।
मानक मान समान लिअए
झड़कि-झड़कि झड़कए लगल।
कुहरि-कुहरि कलपि-कलपि
छाउर-आगि खसए लगल।
जेना-जेना आगि मड़िआएल
शक्ति श्रम घटए लगल।
घटबी पुरबै पाछू बेहाल
रीन-पेंइच फँसए लगल।
रीनियाक रीन कुरीन बनि-बनि
तरे-तरे घुसकए लगल।
पहुँचीसँ बाँहि पकड़ि

धोबिया खेल खेलए लगल।
दसक दाह सम्हारि पाबि नै
मन-मनतर मथए लगल।
जे कहियो मिथि कहाबए
क्षीण शक्ति कहबए लगल।

हूसि गेल

हूसि गेल सभ खेल खेलौना
हूसि गेल सभ मन-विचार।
जीवन संग जिनगी पिछड़ि
ससरि गेल इजोत-अन्हार।
अन्हारे उपकि अनचिन्ह
अन्हार केना अधला लगतै।
इजोत-अन्हार भेद बिनु बुझने
राति-दिन भजए लगलै।
जेकरे दिन तेकरे राति
रातियेक दिन कहाबए लगलै।
दहिना-वामा रंग-सियाही
नव-नव शब्द गढ़ए लगलै।
जहिना सियाह सियाही बनि
हरिअर-लाल कहाबए लगलै।
कोरा कागज ऊपर ससरि
हारि-जीत लिखए लगलै।
ऊपर उठा, उठा ऊपर
खेल धोबिया खेलए लगलै।
घुमा-घुमा, नचा-नचा
घाट धार पटकए लगलै।
मड़ू-अधमड़ू बना-बना
घुमा-घुमा फेकए लगलै।
गाड़ीक अगुआ पछुआ पकड़ि
जुआ जोति खिंचए लगलै।
रंग-बिरंग जुआ बनि-बनि
खेल-खेलौना कहबए लगलै।
हूसि गेल सभ खेल खेलौना
-

अखड़ा जिनगी

अखड़ा जिनगी सखड़ा बनि-बनि
शुद्ध-अशुद्धक भेद विलीन भेल।
शक्ति चढ़ल जहिना शीशा
नयन ज्योति बदलि चलि गेल।
आशा-आश लगौने मनमे
फल-कुफल बदलि केना गेल।
नै बूझि समझि नै पेलौं
बाटे-घाट बदलि चलि गेल।
अखड़ा जिनगी सखड़ा बनि-बनि
शुद्ध-अशुद्धक भेद विलीन भेल।
जल भरल लोटा अछींजल
शक्ति क्षीण होइत केना गेल।
शक्ति क्षीण होइत हबाइत
अवगुण-गुण बदलि केना गेल।
मानि मान ससरि सामान
खाली-खाली बनि केना गेल।
अखड़ा जिनगी सखड़ा बनि-बनि
शुद्ध-अशुद्ध बीच बदलि केना गेल
मानने देव नै तँ पाथर
जुग-जुगसँ सुनैत एलौं।
पाथर बीच देव विराजए
पानि-हवा लुढ़कैत एलौं।
उड़ि धरती-अकास बीच
उड़ि-उड़ि उड़िआइत गेलौं
पूर्बा-पछबा सम्हारि पाबि नै
चिन्ह-पहचिन्ह विसरैत गेलौं।
अखड़ा जिनगी सखड़ा बनि-बनि
आश-निराश खखराइत पेलौं।

बीटगरहा

टुकड़ा-टुकड़ी बनि अंक जहिना
भूमि भाव संग चलए लगै छै।
अकास-पताल बीच अंतर रहितो
हिलमिल-झिलमिल करए लगै छै।
जूड़ि-जूड़ि अक्षर शब्द सधै छै
अंक कूदि गुन-भाग करै छै।
चालि-ढालि दुनूक दू रहितो
प्रेमक प्रेमी रूप धड़ै छै।
चालि शिकारी घोड़ा जहिना
कूदि-फानि रस्ता बनबै छै
इकाइयो दहाइ चलि तहिना
गरहनि बीट गरहनि रचै छै।
पुरजा-उरजा बनि-बनि अंक
पौआ-अधपइ कनमा-कनइ छै।
अणु-परमाणु जुग जे बनौ
अंक अंक भकराड़ बनल छै।
रूप-गुण सभ ओहिना-ओहिनी
मूल तत्व आधार बनल छै।

बिनु बीटे ठाढ़ केना रहतै
नमगर-छड़गर कड़ची बाँस।
वंशो-वृक्ष तहिना रहै छै
धड़ि-धीर धेने छी आस
अटपट-लटपट खेल चलै छै
आमक गाछ महकारी फड़ै छै
गंध आम पसारि-पसारि
मीठ-तीत सेहो बनबै छै।
भाव-भूमि भवजाल पसारि
नजरि खिरा ताकैत रहै छै।

दौजी-मुड़हन समेटि-समेटि
हवा बीच उड़बैत रहै छै।
बिर्ड़ो बीच बौआइत-ढहनाइत
देखिनिहारो देखैत रहै छै।
पकड़ि पेट खोंइचा छोड़ि
दूधक फेड़-फाड़ देखै छै।
मुदा तैयो, आंगुर चुट्टा बनि
बीछि-बीछि बीआ पकड़ै छै।
गनि-गनि फुटा-हटा
धरतीक भाव बुझै छै।
सुरकुनिया चालि पकड़ि-पकड़ि
समाढ़-जाल तोड़ैत चलै छै।
जहिना कोंपर रूप बाँस बनि
टोपी खोलि अकास धड़ै छै।
पाछू-पछुआ कड़ची सिरजि
नाओं बाँस धड़बए लगै छै।
आशा-आस लगा एक-दोसर
झूला जिनगी झूलए लगै छै।
सोधि-ओधि सिरजि कोंपर
बीट वंश कहबए लगै छै।
अंतिम छोर लीला जिनगीक
आशा आस लगबए लगै छै।
फड़ि-फुला हरिआ-हरिआ
परिवार-गाम बनबए लगै छै।
सर्ग-नर्क उतरि अकास
बोड़िया-बिस्तर समटए छै।

बाल गीत

सुनू बौआ यौ सुनू नूनू यौ
चेहरा देखि मन झहरैए
तरे-तरे देह सिहरैए
तड़पि-तड़पि ओ कुहरि-कुहरि
बेथित भऽ बेथा सुनबैए
बिरड़ोमे उड़ि-उड़ि अहाँ
दोगे सान्हिये पड़ा रहल छी
मातृभूमिक रस पीबि बिना
पुरुखाक पुरुषत्व हरा रहल छी।
मनुखक जिनगी आँकि-आँकि
अपनाकेँ अँकए पड़त।
ने ते गंगा-जमुना जकाँ
बोहिआइत जिनगी चलत।
केकरो मेटेने की कहियो
गंगा आकि कोसी मरतै
धारक पेट सदए धारा
संग-संग चलिते रहतै।
मनुख-मनुखमे भेद कतए
देखए पड़त ओइ दुर्गकेँ
ढाहि ढूहि ओइ आड़ि-धूर
नव जिनगीक नव दुनियाँ बना कऽ।

गाछी भुताइ

बाबाक रोपल गाछी भुताइ।
घाम बहा जरि-जरि सिचलनि।
तामि कोड़ि-कोड़ि गाछ रोपलनि।
नै बुझलनि बॉझिक किरदानी
देखि-देखि मन हर्षित भेलनि।
जे ने कहियो माटि देखलक
फुनगी पकड़ि अकास पकड़लक।
नै देखि जड़ि दिस कहियो
सदति उड़ि बादल पकड़लक।
गामक पोखरि जहिना डेरौन
तहिना दबकल अढ़मे मन।
कानि-खीजि सदति कलपैत
कियो ने बँचबैबला अछि पैत।
जइ धरतीपर बहति गंगा
कमला सहित जमुना धार।
शान्त भऽ सरस्वतीक संग
पहुँचैत मिलि गंगा सागर।
तिल-तिल उत्तर ढलान दिस
अनबरत बहैत सूर्जक धार।
नाचि-नाचि मिलि गाबए
जेबै जरूर-जरूर, ओइ पार।
गाछी बीच बैसि सदि बाबा
सभ किछु देखि रहल छथि।
बाँझक बच्चा अनकर नेत
बिहुँसि-बहुँसि कहै छथि।
नै अछि बौआ गाछी भुताइ
मनक सभ किरदानी छी।
माँजह मन चमकाबह सदिकाल
केकरो नै मनमानी छी।

अंडीक छाहरि

जेसलमेर राजस्थानक जहिना
मिथिलाक कोसी क्षेत्र अछि तहिना।
चकचकौआ बालु जेना ओतए
कोशिकन्होक तहिना एतए।
अजगूत मेल-मिलाप दुनूक छै
अंडी जहिना कोशिकन्हाक वृक्ष
सांगरि तहिना ओतौक छै।
वृक्षे ने छाहरि सिरजैए
सएह ने दुनू करै छै।
मुदा दुनूक दूरी ओतेक
अकास-पतालमे भेद जतेक।
एक उगे सुखल बालुमे
दोसर उगै पनियाहमे।
अजीव नटकिया बाउलो छी?
कतौ-कतौ पानिक परिचए दैत
कतौ-कतौ बिनु पानिक।
पल्ला परिते, सुआइत ने
उड़ि-उड़ि जान गमबैत।
कतबो मोर नाच देखबए
तँए कि बालुक चालि बदलतै।
उल्लू केतबो मुँह दुसत
तैयो लछमियेक सवारी कहौतै।

परदेशी

नै बूझि पेलौं अखन धरि
दाही-रौदीक औरुदा कते।
एक दिन जाड़ माघक बीतने
उनतीस दिन पड़ाएत जते।
बारह मासक साल बनै छै
एक करोटिया ॠतुओ लइ छै
केंचुआ छोड़ि नव रूप पाबि जेना
नव जीवनक नूतन चालि धड़ै छै।
अपन-अपन रूप गढ़ि-गढ़ि
नव सृष्टिक बाट धड़ै छै
नव सिरजि नव युगक
नव विचारक लोक गढ़ै छै।
सृष्टिक भीतर सृष्टि सिरजि
मौसमक सुर-तान भरै छै।
पबिते हवा श्रृंगार सौरभक
ठठा-ठठा मुसकान भरै छै।
पेटक खातिर लुटा रहल छी
इज्जत-आबरू ओ सन-मान
हारल नटुआक संग पकड़ि
गाबै छी प्रभाती विहान।
देखए पड़त मातृभूमि मिथिलाकेँ
माटि-पानि ओ वसात।
अंगेजि अंग जखन बनब
देखि पाएब सोन्हगर अकास।
जे कहियो सातम अकास चढ़ि
मुरलीक तान भरैए
कुरेड़क कुरहरि कटि-कटि
दूरेसँ ढोल बजबैए।

अन्हराएल छी

जते सोझरा चलए चाहै छी
ओते आरो ओझराइए।
टीक पकड़ि चिड़चिड़ी जहिना
टिकासन चढ़ि चिचिआइए।
रंग-बिरंगक अन्हार पसारि
निसचरक सिरजन करैए।
कतौ सूर्ज झापि अन्हार
तँ कतौ बुइध विलाइए।
सृष्टिक सिरजने अन्हारमे
इजोतमे आनए पड़त।
जाधरि से नै आनि पाएब।
अन्हारे-अन्हार बौअए पड़त।
दोहरा कऽ कियो जन्म नै लइए
ऐ धुआ-काया संग।
उच्चमना संकल्प साधि
पकड़ि पथ चलू निमग्न।
दुनियाँक सुन्दर फुलवाड़ीकेँ
चिक्कन-चुनमुन साजैत चलू।
प्रेमाश्रु संग सराबोर भऽ
हँसैत-गबैत चलैत चलू।

ओ दिन

ओ दिन, ओ दिन छी,
जइ दिन भयक प्रेमी देखलौं।
ओ दिन, ओ दिन छी,
जइ दिन भयसँ यारी केलौं,
दर्शन पाबि भैयारी केलौं।

माघ मास राति सतपहरा
आशाक आश भैयारी देखलौं।
ओ दिन, ओ दिन छी,
संग सटल भैयारी देखलौं।

जेकर सिर सोर बनि
पानिक संग पताल पहुँचए।
सिसकि-सिसकि, संग आशाक
जिनगीक संग जीबैत चलए।
संग मिलि हँसए,
गबैत चलए संग-संग।
राति-दिन सहन सिरजि
कूदि-कूदि कुदैत संग।

घर भैयारी, बाहर भैयारी
संगी, मित्र-दोस्त कहबैत।
प्रेमाश्रु संग ढुलकि-ढुलकि
धरती बीच नाओं धड़बैत।
सिर उसरगए मिलि संग
वीर-शहीद कहबैए।
मातृभूमि ओ पितृभूमि बीच
सेवा कऽ जगबैए।

बजिते एक देबाल घड़ी
घरक घंटी घुनघुनाएल।
पकड़ि कान गुनगुना-गुना
रणभूमि-कर्मभूमि देखाएल।
सातो घर सजल सेज
देखते मन तड़पि उठल।
दलदल करैत दलकीमे
चिचिया-चिचिया चहकि उठल।
अछि कठिन कर्मक परीक्षा
मुदा, सफल हएब नै कठिन।
विचार सहजि सुता
समेटि-समेटि कएल एकठीन।
बेंग सदृश कूदए लगैत
तरजू कला समेटि धड़ब।
कलाकारी छी, मोचना कठिन
आङुरसँ पकड़ि धड़ब।
जिनगी परीक्षाक ओ घड़ी
जइ दिन जिनगी नाओं पड़ए।
जागल-सूतल बीच दुनूक
जागलनाथ काज धड़ए।
नीक काजक नीक फल
एक्के आँखिये दुनियाँ देखैत।
कनाह कहू आकि समूह
देखि-देखि लगैत समोह।
साध सिरजि साधक सदति
फूल वृक्ष सजबैए।
सिरजि शक्ति, शक्ति संग
सदति भक्ति करैए।

सती-बेश्या

सरिपहुँ कहै छी, कियो नै
बसए दिअए चाहैए।
मोख पकड़ि मुँह छेकि
खूर-पुजैक आहूत करैए।
बिनु खूर-पुजौने पकड़ि-पकड़ि
दलदलमे भरमबैए।
जाधरि दल-दल टपि नै पेबै
गाछक झोंझ लसकौनेए।
लसकैयोक बिकराल वोन छै
पसरल सगतरि धरतीपर।
केना ससरि पाएब ओकरा
अरूप-सरूप क्षण बदलै छै।
नव-नव चालि नव रूप सजा कऽ
धूप-छाँह बनि खेलै छै।
जाधरि जड़िकेँ जानि नै पेबै
नाओं-ठेकान केना बुझबै।
बिनु नाओं-ठेकाने, केनए-केनए
मड़िआएल आँखि चिन्ह पेबै।
बिनु देखने चीन्हि केना पेबै
चालि-चलैन आ किरदानी।
बिनु गछाड़ने, डेग नै कहियो
देत उठए अपन मन-मानी।
जुग-जुगसँ छिछिया-छिछिया
छुछका-छुछका छुछकौने अछि।
राड़ी-डबहारी रोपि-रोपि
राहीकेँ रगरगबैत अछि।

जँ लग्गाक लागि लगा
जाए चाहब ओइ पार।

बीचे रूप बदलि-बदलि
धरा खसाएल बीच धार।

जखने नकसी बान्हि लग्गा
हँसि लग्गा लग्गी बनत।
लग्गा भरि जे छल हटल
ससरि-ससरि लग आऔत।
पाबि बान्ह जेना खढ़ आ बत्ती
घर नाओं धड़बैत छै।
तहिना सहेजते सज्या
बसोबास बनबैत छै।
बीत भरि ओ बाँसक छिप्पी
उनटि टूटि सटैत छै।
पड़िते बान्ह दुनू-सँ-दुनू
नोकसी रूप धड़ैत छै।
जखने पड़ैत जौड़क लटपटी
प्रेमिकाकेँ दिअए इशारा।
अजगुत रूप प्रेमी-प्रेमिकाक
दुनूक-दुनू बनैत सहारा।
लीला अगम बनल दुनूक
अछि चाहैत करए सभ प्रेम।
मुदा, की? ई थिक अनुचित
हँसि दुनियासँ करी प्रेम।
लग्गिये छी जौहरी करामाती
कखनो तोड़ए गाछक डारि।
कखनो नापए कूदि-कूदि
खेते-खेत बनबैत आड़ि।
कखनो धारमे नाव दौगा
धार पार करैत अछि।
कखनो फल-फूल तोड़ि-तोड़ि
भुखल पेट भरैत अछि।
लग्गी बनि बनिते ओजार

नचनी-नाच नचए लगैत।
अपने हाथे खुआ-खुआ
अकड़ि-सकड़ि चालि धड़बैत।
हाथ-हथियार बनिते बनैत
कनखिया देखबए उड़ियाइत सती।
बिलगा-बिलगा, बुझा-बुझा
आन नै, ओहो अपने हेती।

पड़िते दृष्टि दहलि, ढुलकि
गमे-गमे गुड़कए लगैत।
पकड़ि डोर सिनेही सिनेह।
स-हरि सिहरि सटए लगैत।
कँपैत करेज कुहरि कुकुआ
गुन-गुन गुनाइत गीत।
तड़कि-तड़पि तन-तना
प्रेमी मन झकसए लगैत।
रेहे-रेहे सींच झकासी
सीता शीत सिहरबए लगैत।
चाक चढ़ल पानि-माटि जेना
नव-नव वर्तन गढ़ैए।
तहिना मन तनमे
सुमति सोच सिरजैए।

सच्चे कहै छी, नै बसए
दिअए चाहैए हमरा।
झीक-झीक झोंट झटकि
लीड़ी-बीड़ी सेहो करैए।
नवकी कनियाँ बूझि-बूझि
बेश्या-सती बनबैए।
धर्मराजसँ यमराज बनि
छतपति नाओं धड़बैए।
केना बँचि पाएत यौ भैया

सत्-क सतीत्व हमर?
केना जीब पाएब हम
संसारक ई समर।
मोख मारि बैसल बेश्या-ए
ससरि केना सकब कहू?
देखिते देखि, बुझिते बूझि
की करब सेहो कहू?

सत बसाएब बेश्या कहाँ
वृत्त-कुवृत्तिक खेल छी।
हाथ-मुँहक किरदानी सभ
देखि-देखि बकलेल छी।
चहल-पहल किरदानी शब्दक
नाकक नाथ बनबैत अछि।
सुकुमार-सुकोमल नाक पाबि
गाएक आत्मा नथैत अछि।
पड़िते नाक पड़ि नथिया
नर्तकीक रूप गढ़ैत अछि।
काजर-चून लगा-लगा
मारि ठहाका हँसैत अछि।
काजर घर केना बास करब
करए पड़त बुइधिक स्नान।
केने बिना से केना पएबे
तन-मन अन्तर धान।
धाने-धन कहबै छै भैया
केना ने मुँहो खोलब।
मुदा, मुकरि-मुकरि मकड़जाल
पानि-बरफ केना बुझब।

दूजा भाव

प्रीत एना किअए पिताजी,
विपरीत बनि चलैए।
पुत्र-पुत्रीक सिनेह बीच
दूजा-भावक रूप धड़ैए।
युग बदलिते कर्म-धर्म
अपन रूप बदलैए।
साक्षी बनि इतिहास ठाढ़ भऽ
मुस्की मारि कहैए।
त्रेता चढ़िते बहुत किछु बदलल
सत्-युगक आचार-विचार।
तहिना ने द्वापरो अबिते
त्रेताक बदललक चालि-बेवहार।
भैया जन्म दिन केर
हँसी-खुशी मनबै छी।
हमरा बेर एना किअए होइए
माथ-हाथ धड़ै छी।
खेनाइ-पीनाइ पढ़ौनाइ-लिखौनाइ
भैया संग जे अछि।
हमरो संग तेहने रखने छी
भाव एहेन दूजा किअए अछि।
बेटा-बेटीक संग जँ
पापक एहेन किरदानी रहत।
तखन केना मनुखक मनुखता
धरती बीच बचल रहत।

जीबैले लड़ए पड़त

लड़ि जीबू आकि मरि जीबू
जिनगीक दू धार बहै छै।
अपन सभ भाग्य निर्माता
मनोनुकूल जिनगी बनै छै।
लक्ष्य बिनु जिनगी ओहने
जेहेन बाँझ-बहिल होइए।
सुगरक मल सदृश ओकर
नीप-पोत विहीन होइए।
सभ चाहए आनन्दक जीवन
डारि-पात फूल फुलाए।
बिनु सुख-चैने केना फुलेतै
अछैते पराने जिनगी कुम्हलाए।
सुख-चैन फड़ै दुख मेटेने
दुख मेटाएत संघर्षमे।
तीन दुख पसरल छै सगतरि
बौआइत ढहनाइत जीवनमे।
दैहिक-दैविक भौतिक ताप
बिलगा-बिलगा देखए पड़त।
बिनु देखने दिशाहीन भऽ
औना-पौना सड़ि मरब।
तीनूक अपन-अपन दुनियाँ
लीला तीनूक रंग-बिरंग।
तीनू बाँटि नेने छै धरती
कुदैत-फानैत रंग-रंग।

पगलखना

पागल ऐ संसारमे
पगलपनी खेल चलैत रहै छै।
पगला पागल पकड़ि
पगलखाना बनबैत रहै छै।
लटखेना दोकान जहिना
मिरचाइ-मिसरी संग रहै छै।
संसारक झखुराएल वन तहिना
पगलपाना गाछ पनपैत रहै छै।
पागल ऐ संसारमे
पगलपनी खेल चलैत रहै छै।
कियो पगलाएल खेत कीनैले
तँ कियो पगलाएल चुमै खेतले।
कियो पगलाएल डाक-डाकनि
तँ कियो पगलाइत अगवास ले।
रहितो सबहक एक मंशा
बाट-घाट बौराइत चलै छै।
सभकेँ सभ पागल कहि
नाच पगलपनी नचैत रहै छै।
पागल ऐ संसारमे
पगलपनी खेल चलैत रहै छै।
कियो पगलाएल सुख-शान्ति ले
कियो मधुशाला बौराएल रहै छै।
तेज सवारी पकड़ि चढ़ि
बैलेंस जिनगी मिलबैत चलै छै।
पागल ऐ संसारमे
पगलपनी खेल चलैत रहै छै।
लपकि-झपकि मासूम मौसममे
झाखुर वन बनबैत चलै छै।
पागल ऐ संसारमे

पगलपनी खेल चलैत रहै छै।
एक-भग्गू लूरि-बुधि संग
एकबद्धू बाट बना चलै छै।
सुखाएल हाड़ स्वान जहिना
अपने रस पीबैत जीबै छै।
जहिये जनमल मानव धरती
संग स्वान अबैत रहल छै।
कटने-चटने सेर बरोबरि
संग मिल संग नचैत रहै छै।
पागल ऐ संसारमे
पगलपनी खेल चलैत रहै।